Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 11 30 नवम्बर, 2021 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

दीन के बन्धु चौ० छोटू राम

24 नवम्बर, 140वें जन्म दिवस पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

किसानों, मजदूरों एवं विशेषतौर से संयुक्त पंजाब के ग्रामीण समाज के मसीहा दीन बन्धु चौ० छोटू राम का जन्म वैसे तो 24 नवम्बर 1881 को रोहतक (हरियाणा) के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में एक गरीब किसान सुखीराम के घर में हुआ लेकिन बसन्त पंचमी के त्योहार के अवसर पर एक दिन लाहौर में एक किसान सम्मेलन के दौरान उन्होने अपनी प्रबल इच्छा जाहिर की कि किसानों की खुशहाली एवं फसलों की खुशबू से परिपूर्ण बसंत पंचमी का पर्व ही मेरे जन्म दिवस के रूप में मनाया जाये। अतः इस महा शख्शीयत की यह प्रबल इच्छा ही उनके किसान–मजदूर वर्ग के प्रति गहरे लगाव को जाहिर करती है। इसके साथ ही अपनी बौद्धिक कुशलता के बलबूते पर सेंट स्टीफन कालेज दिल्ली से स्नातक की डिग्री हासिल करना और सम्पूर्ण विद्यार्थी जीवन में वजीफे द्वारा कानून में स्नातक तक की डिग्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करना उनकी उच्च स्तरीय बुद्धिमता को प्रमाणित करता है ।

देश को साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार एवं भाई–भतीजावाद जैसी कुरीतियों से बचाने तथा करोड़ों किसानों व मजदूरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने हेतू उन्होने अपने वकालत के पेशे को ठुकरा कर सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष चुने गये, लेकिन मात्र चार वर्ष बाद कलकत्ता अधिवेशन के अन्दर वर्ष 1920 में ही कांग्रेस द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन से अपनी असहमति जताते हुए कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। अतः वर्ष 1923 में सर फजेले हुसैन के साथ मिलकर किसान,मजदूर व छोटे काश्तकारों के कल्याण को सर्वोपरि रखते हुए नैशनल यूनियननिष्ट पार्टी का गठन किया । यह पार्टी धर्म निरपेक्षता के आधार पर गठित की गई । वर्ष 1923 में पंजाब में विधान सभा चुनाव जीतने के बाद दीन बन्धु सर छोटू राम कृषि मंत्री बने और 26 दिसम्बर 1926 तक मंत्री रहे । इस थोड़े से समय में ही उन्होने जनहित में अनेकों कार्य किये जिनमें किसानों को साहूकारों व सूदखोरों के प्रभाव से मुक्ति दिलाने के लिए कई लाभकारी कानून पारित करवाये गये जैसा कि 'पंजाब कर्जा रहित अधिनियम 1934' जिसके अनुसार अगर किसी काश्तकार ने कर्ज ली गई राशी को दोगुना या अधिक का भुगतान कर दिया है तो उसको कर्ज की राशी से स्वतः मुक्ति मिल जायेगी ।

'पंजाब कर्जदार सुरक्षा अधिनियम 1936' जिसके अनुसार पूर्व मालिक के कर्ज के लिए उसके वारिस की जमीन के हस्तांतरण पर रोक लगी और खड़ी फसल व वृक्षों को बेचने व कुर्की करने पर रोक लगी । इसी प्रकार 'पंजाब राजस्व कानून 1928', 'पंजाब कर्जदाता पंजीकरण अधिनियम 1938' व 'रहनशुदा जमीनों की बहाली का अधिनियम 1938' भी पारित किये गये । इन विधेयकों का प्रभावशाली क्रियान्वयन कर्जा पीड़ित किसानों के लिए वरदान साबित हुआ जिनके तहत किसान के मूलभूत कृषि यंत्र व साधन– हल, बैल आदि की किसी भी अवस्था में कुर्की नहीं की जा सकती । राष्ट्रीय योजनाओं में भाखड़ा नग्गल डैम की प्रस्तावना का स्वरूप और उसका क्रियान्वयन चौ0 छोटूराम की सबसे बड़ी देन है । उन्होने इस योजना के निर्माण के लिए मार्च 1933 में पंजाब लेजीस्लेटिव कांउसिल में प्रस्ताव पास करवाकर इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए काफी बाधाओं के बावजूद अन्तिम समय तक निरन्तर प्रयास जारी रखे और अन्त में 8 जनवरी 1945 को लम्बे संघर्ष के बाद बिस्तर से ही इस परियोजना को लागू करने के आदेश करने में सफल हुए । इसके बाद चौ0 साहब काफी प्रसन्न हुए और कहने लगे कि आज मैनें अपनी सबसे प्यारी योजना भाखड़ा डैम योजना पूरी करने के लिए हस्ताक्षर कर दिये हैं ।

चौ0 साहब की धर्मनिरपेक्षता व राष्ट्रवादी पार्टी सदैव राष्ट्र विरोधी तत्वों को समाप्त करने का प्रयास करती रही। वे हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर रहे हैं । जब मुस्लिम लीग पंजाब में युनियननिष्ट पार्टी को खत्म करने का प्रयास कर रही थी और देश विरोधी तत्वों द्वारा मजहब के नाम पर देश को बांटने की कोशिश की जा रही थी उस समय 1944 में चौ0 छोटूराम ने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर में एक विशाल रैली आयोजित की जिसमें डिप्टी कमीशनर व मुस्लमान मुल्लाओं के विरोध के बावजूद भी पचास हजार लोगों ने भाग लिया और राष्ट्र विरोधी ताकतों के इरादों को नकार दिया लेकिन अफसोस है कि चौ0 साहब ज्यादा समय तक इन ताकतों का सामना करने के लिए जीवित नहीं रहे और राष्ट्र विरोधी ताकतें अलग इस्लामिक राज्य–पाकिस्तान का

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

गठन कराने में सफल हो गईं । जाहिर है कि अगर चौ0 साहब जिन्दा होते तो देश का बटवांरा न हो पाता । चौ0 साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे ''हम मौत पसन्द करते हैं, विभाजन नहीं''। वे महजब के नाम पर बने इस नये इस्लामिक राज्य–पाकिस्तान को बंगाल व पंजाब के हिन्दुओं तथा सिक्खों के लिए अत्याचार का क्षेत्र समझते थे जिसका असली स्वरूप आज सारे राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहा है। चौ0 छोटू राम एक अनथक योद्धा, महामानव, निरन्तर कार्य करने की क्षमता तथा दुश्मन का प्रत्योत्तर देने के लिए मजबूत इरादे के धनी एवं उच्च व्यक्तित्व वाले कर्मठ योद्धा थे । वे जाति–पाती के बन्धनों से मुक्त होकर किसी को भी अपना बनाने में सक्षम थे । उन्होने जाट गजटीयर नाम से पत्रिका प्रकाशित करके किसान–मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए शिक्षा अभियान चलाकर समाज में उनकी दिक्कतों को उजागर किया। वे गरीब व जरूरतमंद बच्चों को अपनी जेब से आर्थिक सहायता तक प्रदान कर देते थे और जन साधारण तक शिक्षा का प्रसार करने के लिए गुरूकुल व जाट संस्थाओं की स्थापना की । उनके द्वारा स्थापित किये गये सर छोटू राम शिक्षा कोष से समाज के काफी लोगों ने सहायता प्राप्त की, जिनमें चौ0 चान्दराम भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री व पाकिस्तान के एक मात्र नोबेल पुरूस्कार विजेता डा0 अब्दुस कलाम शामिल हैं। अब्दुस कलाम ने स्वंय माना है कि सर छोटू राम शिक्षा कोष से सहायता पाये बगैर उनके लिए नोबेल पुरूस्कार पाना असम्भव था ।

दीनबन्धु चौ० छोटू राम हमेशा आपसी भाईचारे, हिन्दू मुस्लिम एकता, इंसानी मोहब्बत एवं सदभावना के पक्षधर रहे। अतः वे नौजवानों को प्रोत्साहन देने के लिए हमेशा डा० सर मोहम्मद इकबाल के निम्न शब्दों को सार्वजनिक तौर से अत्यन्त स्नेह व आदर सहित दुहराते थे :–

यकीने मोहक्कम अमल पैहयाम मोहब्बते फातेह आलम।
जिहादे जिन्दगानी में ये है मर्दो की शमशीरें।।

अर्थात तुरन्त पहल, पक्का इरादा व आपसी भाईचार ही मर्दो की ढ़ाल है । उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि उन दिनों कृषक व ग्रामीण समाज में बढ़ती हुई भुखमरी व बेरोजगारी को दूर करने के लिए सर छोटू राम ने अहम् भूमिका निभाई। इसलिए उन्होने रोहतक जिले में बेरोजगारी व अशिक्षा को दूर करने के लिए किसान मजदूरों के बच्चों को कांग्रेस की नीति के विरोध में सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया, जिसको महिलाओं ने भी उन दिनों एक गीत के रूप में गाना शुरू कर दिया :– भरती हो जा रे रंगरूट, यहां मिले टूटे जूते, वहां मिलेगें बूट। यही एक मात्र कारण है कि आज रोहतक जिले के अधिकारी सेना प्रमुख भी रह चुके हैं और दो दर्जन से अधिक मेजर व लेटीनैन्ट जरनल के पदों पर तैनात हैं।

आज देश की आंतरिक व बाहरी सुरक्षा के उपर गम्भीर संकट के बादलों को मंडराते देख तथा राजनेताओं के खोखले बयानबाजी व पड़ौसी देश पाकिस्तान व चीन की निरन्तर धमकियों को मध्यनजर रखते हुए लेखक को दीन बन्धु के निम्न सार्वजनिक कथन बार–बार याद आ रहे हैं:–

''जंग में काम आती हैं न तदबीरें, न शमशीरें,
गर हो यकीन जो पैदा तो कट जाती हैं जंजीरें''

किसान–काश्तकार के कल्याण व हितों के लिये दीनबंधु की दूरगामी व तर्कशील सोच रही है। देश की प्रतंत्रता के दौर में भी वे किसान–कमेरे वर्ग के लिये ब्रिटिश साम्राज्य से अपनी तर्कशक्ति से किसान की फसल की एंडवास में वाजिब कीमत तय करा लेते थे लेकिन आज किसान को फसल औने पौने दामों पर कोड़ियों के भाव खरीदी जा रही है और इसी साल खरीफ के सीजन में बहुत सी मंड़ियों में तो धान, बाजरा आदि फसलों की खरीद ही नहीं की गई। अभी हाल ही में जींद मंडी में एक किसान अपनी धान की फसल की खरीद के लिये मंडी व जिला प्रशासन से सरेआम गुहार लगाता रहा लेकिन कोई सुनवाई नहीं की गई। आज चौ० छोटूराम व चौ० देवीलाल जैसा कोई एक छत्र नेता नही है जिस कारण यह वर्ग सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण लगातार पिछड़ रहा है और सरकार में किसान–काश्तकार वर्ग की अगुवाई करने वाला कोई भी नेता नहीं है। गत वर्ष सरकार द्वारा किसानों के हितों की अनदेखी करके तीन कृषि बिल पास कर दिये गये जो पूरी तरह कृषि व्यवस्था के खिलाफ है और इनसे किसान वर्ग तबाह होकर पूर्णतया व्यापारिक घरानो के अधीन हो जायेगा। इन कृषि बिलों का सारे राष्ट्र विशेषकर पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि कृषि प्रधान प्रदेशों में पिछले एक वर्ष से घोर विरोध हो रहा है लेकिन सरकार अन्नदाता की समस्या पर गौर करने की वजाये लाठी चार्ज व पुलिस प्रयोग से किसान वर्ग को दबाना चाहती है। किसान अपनी फसल को बेचने के लिये भी धक्के खा रहे हैं क्योंकि सरकार द्वारा इन कृषि बिलों में किसानी उपज की जीवन रेखा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का कहीं भी उल्लेख नहीं है। इसलिये आजादी के 74 वर्ष बाद भी किसान की हालत सुधरने की बजाये उनकी समस्याएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं और आने वाले दिनों में

किसान भीख मांगने पर मजबूर हो जायेगा। एक अनुमान के अनुसार विगत 10 वर्षो के अन्दर 70000 से अधिक किसान खुदकुशी कर चुके हैं और पूरे देश में आर्थिक आंतकवाद का माहौल बन गया है। किसान विरोधी तीन कृषि बिलों के विरोध में चल रहे आंदोलन में 600 से अधिक किसान जान गवां बैठे हैं लेकिन सरकार द्वारा एक भी किसान की मृत्यु पर शोक के तौर पर दो शब्द भी नहीं कहे गये। इसके विपरीत किसानों पर देशद्रोह के मुकदमें दर्ज किये जा रहे हैं। सरकार द्वारा किसान विरोधी कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा तो कर दी गई लेकिन इन कानूनों को कृषि व किसान काश्तकार हित में संसद में कानूनों को कृषि व किसान काश्तकार हित में संसद में कानून बनाकर रद करके वापस लिया जाना चाहिए। इसके साथ ही आंदोलन में जान गंवाने वाले किसानों को उचित मुआवजा देकर परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने, किसान फसल की खरीद के लिये एम.एस.पी. को कानूनी तौर पर लागू करने, किसानों पर दर्ज मुकदमें वापिस लेने आदि निर्णय तुरन्त प्रभाव से लिये जाने चाहिए।

चौ० छोटूराम का जीवन उड़ते बालू–कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा से ग्रस्त कृषक समाज के उद्धारक के रूप में ही गुजरा क्योंकि उन्होने स्वंय यह सब कुछ भोगा तथा महसूस किया था। उन्होने मुंशी प्रेमचंद के पात्र 'होरी' गोबर और धनियां की पीड़ा का अनुभव किया था, आश्वासनों पर विश्वास नहीं किया बल्कि एक क्रांति दूत बनकर उभरे। वे हमेशा कहते थे ''नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' चौ० छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सुत्रधार बने। दीन बंधु चौ० छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ–साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपुत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करवा लो तो उन्होंने उनको लताड़ते हुए कहा कि जब समस्त संयुक्त पंजाब के नर–नारी, सुपुत्र–सुपुत्रियां उनकी संतान हैं, तो दूसरी शादी क्यों करवाऊं।

दीन बंधु चौ० छोटूराम ने अपने जीवन काल में ही बढ़ रहे प्रदूषण पर आशंका जताई थी तथा वातावरण संरक्षण हेतू सरकार को चेताया था। उन्होने उद्यमकर्ताओं से आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने हेतू उन्होने किसानों को खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारों ओर वृक्ष तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन रखने से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। आज वैज्ञानिकों को इसकी सुध आई है। समय रहते उचित पग उठाए होते तो आज ओजोन लेयर को क्षति नहीं पहुंचती और इंसान भंयकर बीमारियों से बचा रहता। वे सादा खाते, सादा पहनते थे ताकि जनता उनका अनुशरण कर निरोगी जीवन व्यतीत कर सके।

आज किसान की दूर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिये सुखे, बाढ़, बीमारी के बचाव हेतू चौ० छोटू राम द्वारा स्थापित किसान कोश की तर्ज पर केन्द्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रीय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। इस कोष से किसान–मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं। लेखक जाट सभा के प्रधान के तौर पर भाखड़ा नंगल डैम पर दीन बन्धु चौ० छोटू राम की प्रतिमा स्थापित करने तथा पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में उनके नाम से चेयर स्थापित करने के लिये अनेको बार भारत सरकार तथा यूनिवसिर्टी ग्रॉट कमीशन को पत्र लिखकर आग्रह कर चुके है। चेयर स्थापित करने के लिये पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा 5 करोड़ का खर्च बताया गया है जोकि एक संस्था के लिये नामुमकिन है लेकिन सरकार व यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन के लिये यह कोई मुश्किल कार्य नहीं है। दीन बन्धु की यादगार में ये प्रशंसनीय कार्य करने से ही उनको सच्ची श्रद्धाजंली दी जा सकती है। इसी वर्ष सितंबर में महामहिम उपराष्ट्रपति द्वारा दीनबंधु चौ. छोटू राम की जीवनी पर हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी कुरूक्षेत्र द्वारा प्रकाशित सर छोटूराम राइटिंग्स एंड स्पीचिज 5 खण्डों का विमोचन किया गया है जोकि इस महापुरूष के सम्मान के लिये साहसिक कदम है।

इसके साथ ही किसान के हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। आज कृषक–मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता सम्पन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु चौ० छोटूराम की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समाज, किसान, कृषक–मजदूर वर्ग के विकास का उनका स्वपन्न साकार हो सके।

डॉ० महेंद्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चैयरमेन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

जाटों का इतिहास रामायण काल से शुभारम्भ (रामायणकाल) श्री रामचन्द्र जी जाट थे।

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी, (सेवानिवृत)

सर्यूवंशी वैवस्तमुन का पुत्र इक्ष्वाकु था जो अयोध्या नगरी का प्रथम राजा था। इक्ष्वाकु से विकुक्षी इससे पूर्व जिसने असुरों को हराया जिससे 'काकुस्थ' नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी के नाम से सूर्यवंशियों में काकुस्थ प्रचलित हुआ जो कि जाट वंश हैं। भाषा भेद से यह काकुस्थ जाट वंश काक, कुकाकतीय, कक्क और काकरान कहलाया जोकि इस जाट गोत्र के लोग विभिन्न प्रान्तों में आबाद हैं। इसी वंश में आगे चलकर 'रघु' महाराज हुए। आगे इसी से दशरथ तथा दशरथ के चार पुत्र श्री रामचन्द्र जी 'काकुस्थ' और 'रघुवंश' के जाट थे। बाल्मिकी रामायण में इसके अनेक उदाहरण है जिसमें से कुछ इस प्रकार हैं।

1. विश्वामित्र राजा दशरथ को कहते हैं काकुत्स्थ नन्दन। यदि वशिष्ठ आदि आपके सभी मन्त्री आपको अनुमति दे तो आप श्री राम को मेरे साथ भेज दिजिए (बालकंडे एकानविशः सर्ग श्लोक)।

2. आगे–आगे विश्वामित्र उनके पीछे काकपक्षधारी महायशस्वी श्री राम तथा पीछे–पीछे सुमित्रा कुमार लक्ष्मण आ रहे थे (बालकंडे द्वाविशः सर्ग श्लोक 6)

3. विश्वामित्र श्री राम से कहते हैं काकुत्स्थ नन्दन मैंने तुम्हें इन दोनों योद्धाओं को देने का विचार किया है। (बालकंडे द्वाविशः सर्ग श्लोक 20)

4. रघुनन्दन! तुम गऊओं और ब्राह्मणों का कल्याण करने के लिए दुष्ट पराक्रमवात इस परम भंयकर दुराचारणी भक्षी (ताड़का) का वध कर डालो (बालकंडे द्वाविश पंच सर्ग श्लोक 16)

5. कबन्ध नामक राक्षस ने बतलाया–रघुनन्दन आप धर्मपरायण सन्यासिनी शबरी के घर जाईयें (बालकंडे प्रथम श्लोक 56)

6. मर्यादा पुरूषोतम राम चन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र लव से सूर्यवंशी लाम्बा जाट का प्रचलन हुआ।

7. मासिक पत्रिका हरियाणा जाट सभा समाचार व सुझाव मुख्य कार्यालय 613 जाट सभा धर्मशाला हिसार। 10 दिसम्बर, 1987 के पृष्ठ 1 पर लेख है। भगवान राम जाट थे। मध्यप्रदेश के जाट सभा के चौ० रामलाल जी डोगोवार निवास ग्राम व डा० हरवार जिला मन्दसौर (म.प्र.) का पत्र इस कार्यालय में प्राप्त हुआ कि आपने लिखा है कि भगवान श्री रामचन्द्र व भगवान श्री कृष्ण जाट क्षत्रिय थे। ये राजपूत नहीं थे। यहां मैं दोबारा फिर एक बार ध्यान दिलाना चाहूंगा कि राजपूतों की उत्पति तो बारहवीं शताब्दी में ही हुई है। इससे पहले न प्राचीन भारत के इतिहास में और न ही मध्यकालीन 11वीं शताब्दी तक विश्व के इतिहास में राजपूतों का कहीं भी कोई नाम नहीं था और ना कोई ये जानता था राजपूत भी कोई जाति हैं क्योंकि लेखक, स्वयं एम.ए. इतिहास हैं। लेखक ने प्राचीन भारत का इतिहास, मध्यकालीन भारत का इतिहास, आधुनिक भारत का इतिहास, इंग्लैंड व यूरोप का इतिहास आदि इन सभी इतिहास की बाखूबी जानकारी है। बारहवीं शताब्दी से पहले संसार में राजपूतों का कहीं भी कोई नाम इतिहास में नहीं था।

8. श्री रामचन्द्र जी के दूसरे पुत्र कुश से कुशवाहा जाट वंश प्रचलित हुआ। कुश को दक्षित्र कौशल का राजा बनाया गया उसने विंध्याचल पर्वत पर कुरावती (कुशस्थली) नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया (वा.श. उत्तरकांड सर्ग 107) इसी प्रकार श्री रामचन्द्र जी को रघुनन्दन रघुकुल, काकुत्स्थ, कूलभूषण रघुवंशी अनेक स्थानों पर इस बाल्मिकी रामायण में लिखा हुआ है जो कि इसके जाट होने के प्रमाण हैं। अतः उपरोक्त सभी प्रमाणों एवं उदाहरणों से सिद्ध हो जाता है कि मर्यादा पुरूषोतम श्री भगवान राम जी जाट थे।

महाराजा द्वारकाधीश श्री कृष्ण जी जाट थे।

श्री कृष्ण भगवान जी भी जाट थे। इसके कुछ ठोस प्रमाण निम्न प्रकार से हैं।

जाटों की उत्पति व प्राचीनता :–

जाट शब्द की उत्पति के विषय में इतिहासकारों के विभिन्न मत हैं। फिर भी अध्ययन करने से पता चलता है कि महाभारत युद्ध से पूर्व या महाभारत युद्ध के समय जाट जाति का उद्धय हो चुका था। जाटों की उत्पति के विषय में निम्न मत प्रचलित हैं।

1. चौधरी रामलाल हाला के अनुसार जाट जाति महाभारत से पहले से ही रामलाल हाला ने श्री कृष्ण भगवान से अड़तीसवीं पीढ़ी पहले होने वाले कुशना याट से जाट शब्द की उत्पति को स्वीकार किया है। महाभारत के करण पर्व में जती नामक जाति का उल्लेख मिलता है। यह जर्ता या जरित्का जाट, जाटों की ओर इशारा करती है। आगे चलकर ये जरित्का से जाट कहलायें।

2. सिंध रियासत के गन्धार प्रदेश में पैदा होने वाले महर्षि पाणिनि ने अष्टध्यायी व्याकरण में लिखा है कि (जट झट् संघाते) जट शब्द समूह या एकता के लिए प्रयोग किया जाता है। जट शब्द का अर्थ जुटाना या बिखरी हुई शक्तियों का

एकत्र करना है। जट/जाट जाति की उत्पति का जो इतिहास है सो वह अत्यत आश्चर्यजनक है। इस इतिहास से देव जाति का गर्व होता है। इतिहासकारों, कवियों ने जट/जाट जाति के इतिहास को प्रकाशित नहीं किया है। उस इतिहास को हम तुम्हारे समक्ष यथार्थ रूप से वर्णन करते हैं।

3. देव संहिता, हे महाबली भगवान शिव हमारे सामने कृपा करके जट/जाट जाति का जन्म एवं कथन प्रस्तुत किजिए। हे शंकर जी, इनके माता–पिता कौन और किस काल में इनका जन्म हुआ।

तब भगवान शिव कहते हैं, हे जग जननी! मैं तुम्हारे सामने जट/जाट जाति का जन्म एवं कर्म, सत्य वर्णन करता हूँ। जो आज तक न किसी ने कहा है और न ही सुना है।

जट/जाट महाबली, महा वीर्यमान और बडे पराक्रमी है और सत्यवादी है जाट/जट जाति अन्य जातियों से श्रेष्ठ है तथा दृढ प्रतिज्ञा वाले हैं। क्षत्रिय प्रभूति क्षितिपालों के पूर्व यह जाति ही पृथ्वी पर राजे–महाराजे रही है। सृष्टि की आदि में वीरभद्र जी की योगमाया के प्रभाव से उत्पन्न जो पुरूष और ब्रह्मपुत्र दक्ष महाराज की कन्या गरमी से जट/जाट जाति की उत्पति हुई हैं।

7. ठाकुर देशराज लिखते है कि जाट शब्द की उत्पति और उसके प्रचलन का कारण हमारी स्थापना के अनुसार जो बिल्कुल वैज्ञानिक और सत्य है यह है कि जाट शब्द संस्कृत के ज्ञाति शब्द से बना है। जिसका जात और फिर आगे चलकर जाट होना।

1. श्री कृष्ण द्वारा स्थापित जिब वंश का वर्णन किया गया है वह जाति कहलाया था।

2. कोई भी राजकुल या जाति ज्ञाति–संघ में शामिल हो सकती थी।

3. चूकिं यह संघ जाति प्रधान था व्यक्ति प्रधान नहीं, इसलिए इस संघ में शामिल होते ही उस जाति या वंश की पूर्व नाम की कोई विशेषता नहीं रहती थी। वह जाति संज्ञा में आ जाता था। हाँ, वैवाहिक संबंधों के लिए वे अन्य वंशों के नाम का स्मरण रखते थे जो कालान्तर में गोत्रों के रूप में परिवर्तित हो गए।

4. ज्ञाति की स्थापना से एक बात यह और हुई कि एक ही राज्य वंश के कुछ लोक साम्राज्यवादी विचार होने के कारण और कुछ प्रजातन्त्रवादी विचार रखने से दो भागों में बंट गए। एक साम्रज्यवादी और दूसरा ज्ञातिवादी (प्रजातन्त्र जाति के विधान तथा नियम और शासन प्रणली में विश्वास रखने वाले और उस देश और समाज के लिए कल्याणकारी जो आगे चलकर के जात कहलाने लगे अर्थात ज्ञातिवादी ही ज्ञात, जात अथवा जाट नाम से प्रसिद्ध हुए

5. मि. नेशफिल्ड जो कि भारतीय जातीय–शास्त्र के एक अद्वितीय ज्ञाता माने जाते हैं वे लिखते हैं, जाट जदू के वर्तमान हिन्दी उच्चारण के सिवाए कोई दूसरा शब्द नहीं हैं यह वही जाट जाति है जिसमें श्री कृष्ण जी पैदा हुए।

6. पंडित लेखराम जी आर्य मुसाफिर ने लिखा 'रिसाला जिहाद'। मैं जाट शब्द के यदू अपभ्रंश जदू, जाद, जात और जाट कहे बतलाये हैं।

7. कर्नल टाट : राजस्थान के इतिहास के लेखक ने भी जाट की उत्पति यदू, जादू और जात से जाट ही मानी है साथ में जाटों को भारतीय ही माना है।

8. पूना के प्रसिद्ध इतिहासकार चिंतामणि वैद्य तटैव जरित्काओं को जाट मानते हैं। महाभारत में 'जरित्का' का वर्णन है। इन्हीं जरित्काओं को जाट मानते हैं।

9. मि. विल्सन साहब ने भी कर्नलटाड की राय का समर्थन किया है।

10. अंगद शास्त्री जाठर से जाट की उत्पति मानते हैं।

11. पौराणिक कथाओं के आधार पर शिवजी की जटाओं से पुरूष उत्पन्न हुआ। उसके वंशज जाट कहलाएं।

जाट शब्द विवेचना :–

चौ० रामलाल हाला ने उशना याट से जाट शब्द की उत्पति मानी है। चौ. रामलाल के अनुसार महाभारत से पहले लगभग 38 पीढ़ी यानि लगभग 1000 वर्ष पहले जाट जाति का रूप ले चुका था। मुस्लिम इतिहासकार अलबेरूनी भी महाभारत से पहले से ही जाट पृथ्वी पर निवास करते थे ऐसा माना है। अलबेरूनी की 'भारत' नामक पुस्तक हिन्दी अनुपेज 287 में लिखा है कि जब मथुरा शहर में महाराज कंस की बहन की कोख से वासुदेव के यहां एक बच्चे का जन्म हुआ। ये जट्ट/जाट परिवार के पशुपालक लोग थे।

देव संहिता के अनुसार ज्येष्ठ कृष्ण और ज्येष्ठ युधिष्टर की पदवी के बारे में जो किवदन्तियां हैं इसके विषय में हम इतना जरूर कहेंगे कि श्री कृष्ण और युधिष्टिर दोनों चन्द्रवंशी है। कुछ जाट भी अपने को पांडवों का वंशज बतलाते हैं और भरतपुर के जाटों के बारे में कहा जाता है कि ये श्री कृष्ण के वंशज हैं। महाराजा जवाहर सिंह ने भी एक बार ये बात कहीं थी कि हम भगवान श्री कृष्ण के वंशज हैं जिन्होंने 7 दिन तक गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर उठाए रखा था।

कर्नल जेम्स टाड ने जाटों को इन्डो–सियियन माना है जो ईशा से एक सदी पूर्व आक्सस घाटी से आकर पंजाब में बस गए थे।

पंडित इन्द्रजीत लिखते है कि जब से जाटों का वर्णन मिलता है वह भारतवासी ही हैं और यदि भारत के बाहर कहीं भी उनके निशान मिलते हैं तो वह भी भारत से ही गए हुए हैं।

चिंतामणि विनायक वैघ भी मानते हैं कि जाट न तो हुणों की संतान है और न ही शक–सिथियनों की। जाट विशुद्ध आर्य है और भारतीय। महर्षिदयानन्द ने डंके की चोट से कहा था कि आर्यवत देश आर्यों का बसाया हुआ है। जाट ही उसके आदिवासी हैं। इतिहासकार मिलर लिखते है कि कोई भी लेखक जाटों के बारे में भारतीय ने होने पर शक नहीं कर सकता। श्री गुप्ता जी का कथन है कि जाटों ने तिब्बत, युनान, रोम, अरब ईरान, तुर्की, इंग्लैंड, ग्रीस मिश्र आदि में दृढ़ता और साहस के साथ राज्य किया था और वहां भूमि उपजाऊ बनाई। गुप्ता जी कहते है कि जाट बलची में जाकर मेल और राजस्थान में जाकर राजपूत कहलाएं और पंजाब में जट/जाट कहलाएं। जाट विशुद्ध रूप से भारतीय है और विशुद्ध रूप से आर्य भी है।

1. ययाति के पांच पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र यदु से चन्द्रवंशी और आस्तित्व से विशेष शोभा वृद्धि हुई। यदु के नाम पर ही यादव वंश प्रचलित हुआ जो कि जाट वंश हैं। पं. लेखराज जी के अनुसार, यदु से यादव, यादव से जादव से जाट शब्द संस्कृत व्याकरण के अनुसार बनता है। (क्षत्रियों का इतिहास लेखकः श्री परमेश शर्मा तथा राजपाल शास्त्री)

2. कारनाम राजपूत के लेखक नजमुलगनी ने लिखा है कि इस जाट कौम को भगवान श्री कृष्ण से पैदा होने का गुमान सच ही होता है।

3. कर्नल टाड ने राजपूतों के इतिहास में लिखा है कि जमाना महाभारत में जो चक्र यादव श्री कृष्ण का था उससे जाट स्वार ही मस्सलह (शस्त्रधारी) रहते थे। अर्थात महाभारत काल में श्री कृष्ण जी के नेतृत्व में शस्त्रधारी जाट सैनिक थे।

4. 29 दिसम्बर, 1031 (पहली मुहरर्म 423 हिजरी) को पूरी होने वाले 'तहकीकए हिन्द नामक पुस्तक में प्रसिद्ध अरबी यात्री अबुल रीहा मुहम्दाबेन अहमद अलबरूदी ने भगवान श्री कृष्ण जी को जाट जाति का पूर्वज लिखा है। वह इन परिवारों को यादव लिखता है। मुस्लिम राष्ट्रों में यह धारणा परम्परागत चलती रही है कि जाट यादव संस्कृति के वंशज और युद्धवीर हैं।

5. कर्नल ने भी इस बात को माना है कि जाट यादव हैं। मि. नेशफिल्ड और विल्सन साहब ने कर्नल जेम्ज टॉड की राय मानी है। मि. नेशफिल्ड जो भारतीय जाति शास्त्र के एक महान ज्ञाता थे लिखते है के 'जाट, यदु या जदु के वर्तमान हिन्दी उच्चारण के सिवा कोई दुसरा शब्द नहीं हैं। यह वही जाति है जिसमें भगवान श्री कृष्ण जी पैदा हुए।

6. महाराज श्री कृष्ण जी, 1. वृष्णी 2. अन्धक 3. हाला 4. श्योकन्द 5. डागर 6. सिखार खरे 7. बल्हारा 8. सारन, सिनासिनवार 10. धोकर 11. सोगवार 12. हांगा 13. धनियार 14. भोज, ये सब जाट गोत्र हैं जो आज भी विद्यमान हैं।

7. श्री कृष्ण जी ब्रज में वहां के अंतक, वृष्टि व भोज आदि जाट गोत्रों के लोगों को साथ लेकर द्वारका आए। वहां पहुंचकर उन्होंने भदुवंश के दोकुलो अंधक और वृष्णी का एक राजनैतिक संघ स्थापित किया। उसका नाम ज्ञाति संघ कहलाया। इस संघ के सेनापति स्वयं श्री कृष्ण जी थे। ज्ञाती व ज्ञात से जात अथवा जाट नाम प्रसिद्ध हुआ। ज्ञाति शब्द वर्णन महाभारत कृष्ण व नारद उवाच में आता है।

8. जाटों की परम्परा सिन्धू के पश्चिम क्षेत्र में अपना उद्गम और अपने को यदुवंशी मानते है।

9. पांचमी शताब्दी का एक लेख जाटों को 36 राजकुलों में होने और उनके यदुवंशी होने के दावे को सुदृढ़ करता है।

10. बुलन्दशहर में ममायर्स के लेखक राजा लक्ष्मण सिंह ने लिखा है कि यह प्रमाणित सत्य है कि भरतपुर के जाट श्री कृष्ण से गौरवन्वित यादवों के वंशज हैं। वर्तमान हिजहाईनैस, भरतपुर, जैसलमेर, करौली, मैसूर और सिरमौरे रियास अपने इतिहासों से श्री कृष्ण को सम्बोधित करती हैं।

11. लगभग सभी प्रारम्भिक जाट शासकों के वंश का वर्णन करते हुए समकालिक कवि उन्हें यदुवंशी बतलाते हैं। कवि सुदन, सुजान चरित्र पृ. 4 कवि सोमनाथ, सुजान विलास (पा.ली.) पृ. 133 व कवि उदयराम, सुजान संवत में लिखते है। तीन जाति यादव की अधाक बिशनी भोज। तीन भान्ति तेई भये, तै फिर तिनही पेज। पूर्व जन्म ते यादव बिश्नी तेई प्रकट आई सिनसिनी।

12. एक बार भरतपुर नरेश महाराजा जवाहर सिंह को एक सलाहकार ने कहा था कि जयपुर नरेश भगवान राम की सन्तान हैं उन पर चढ़ाई ना करियों क्यों कि उन्होंने समुद्र पर पुल बान्धा था तो श्री जवाहर सिंह ने उत्तर दिया कि हम भी तो श्री कृष्ण भगवान के वंशज है जिन्होंने 7 दिन तक गोवर्धन पर्वत को उंगली पर उठाये रखा था। यह भी कहते है कि शेखावटी के राजपूतों ने श्री कृष्ण जी की उपासना करनी इसलिए छोड़ दी कि वे जाटों के पूर्वज थे।

13. महाराजा सुरजमल और उनका युग के पृ. 15 पर लेखक प्रकाशचन्द चन्दावता ने लिखा है कि "भूतपूर्व भरतपुर राज्य के शासक मूलतः श्री कृष्णा जी के वंशज एवं यदुवंशी क्षत्रिय है।

14. भरतपुर नरेश श्री कृष्ण जी के वंशज है और वे जाट वंशज के प्रसिद्ध जाट है और क्षत्रिय है। श्री कुंवर रिसाल सिंह यादव प्रणीत ग्रन्थ के पृ. 11, 12, 13 पर कृष्णा जी की वंशावली लिखी है। उसमें श्री कृष्ण से 89वीं पीढ़ी में भरतपुर नरेश महाराजा बदन सिंह है। आपके समेत 13 भरतपुर नरेश हुए। उसमें आए महाराजा व्रजेन्द्र सिंह जी श्री कृष्ण जी के 101वीं पीढ़ी के सब जाट नरेश थे।

15. इसी तरह भरतपुर राज्य का इतिहास लेखक चौबे राधारमणसिकन्द पृ. 1–3 पर भरतपुर राज्य क जाट नरेशों को कृष्ण जी के वंशज और यदुवंशी क्षत्रिय लिखा है।

16. बिडला मन्दिर दिल्ली में भरतपुर नरेश महाराजा सुरजमल का विशाल स्मारक स्थापित है। उस पर लिखा है कि 'आर्य हिन्दु धर्मरक्षक यादववंशी जाटवीर भरतपुर के महाराजा सुरजमल, जिनकी वीर वाहिनी जाट सेना ने मुगलों के लालकिले (आगरा) पर विजय प्राप्त की इसी स्मारक के निकट इन्हीं के दूसरे स्मारक के शिलालेख पर लिखा है कि 'यादव वंशी महाराजा सुरजमल भरतपुर जिसकी वीरताहिनी जाट सेना ने आगरे के प्रसिद्ध शाहजहां के किले पर अधिकार कर लिया था।

17. श्री कृष्णा भगवान जाट कुल में पैदा हुए थे इस बात की प्राथमिकता को अब 9500 वर्ष पूर्व विष्णुपुराण के आधार पर अलबरूनी ने अपनी 'भारत या संबंधी पुस्तक' में स्वीकार किया है। योगीराज महाराज श्री कृष्ण ने जट/जाट संघ का निर्माण किया था जिनका अवशेष चिन्ह वर्तमान जाट जाती है।

18. जाटों का नवीन इतिहास परिशिष्ट 2 और 3 पर लेखक यू. एन. शर्मा ने श्री कृष्ण जी को 6वीं पीढ़ी में सिन्धुपाल से लेकर भरतपुर नरेश सवाईब्रजेन्द्र सिंह (1929 से 1948 ई.) तक सबको यदुवंशी लिखा है जो सभी यदुवंशी जाट थे।

19. जाट इतिहास लेखक डॉ. देशराज ने पृ. 628 पर लिखा है कि 'भरतपुर का राजवंश' भी चन्द्रवंशी है किन्तु यह वृष्णी शाखा के यदुवंशी है जिसमें कि स्वयं भगवान श्री कृष्णा जी थे।

20. महाभारत में श्री कृष्ण जी को कई स्थानों पर वृष्णी वंशी लिखा है। जोकि जाट गोत्र (वंश) है।

क. अश्वस्थामा जान गया था कि वृष्णी वीर श्री कृष्ण और अर्जुन की जीत निश्चित है। (महाभारत कर्ण पर्व अध्याय 17 श्लोक 23)

ख. युधिष्ठिर ने भीम सैन से कहा, भीम देखों यह वृष्णी के वीर श्री कृष्ण ने बडे जोर से शंख बजाया है (महाभारत द्रोणा पर्व अध्याय 127 यलोक 21)

ग. वृष्णी वंशीयों में दो ही महारथी युद्ध के लिए विख्यात हैं। एक तो महाबाहू प्रघुमन (श्री कृष्ण जी पुत्र) और दूसरा सात्यकी (द्रोणा पर्व अध्याय 156 श्लोक 4)

घ. शल्य ने कर्ण से कहा महाबाहू तुम अर्जुन से प्रसन्न रहने वाले वृष्णी वंशी श्री कृष्ण का भी सम्मान करो। (कर्ण पर्व अध्याय 79 श्लोक 28)

ड. वृष्णीवंशी बलराम जी (श्री कृष्ण जी के भाई ने कहा ब्राह्मणों को बहुत धन का दान किया। इसके बाद के रूषगु मुनि के आश्रम पर गए। (शल्य पर्व अध्याय 39 श्लोक 24)

जितने भी प्रमाण ऊपर दिए गए हैं। इससे बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि कृष्ण भगवान जी जाट थे। दूसरे और कोई नहीं हो सकते। इनके प्रमाण के लिए भारतवर्ष में सभी पुराने ग्रन्थों व पुराणों तथा देव संहिताओं तथा उपनिषदों के प्रमाणों से बिल्कुल स्पष्ट हो गया हैं कि श्री कृष्ण जी जो कि जाट थे जिन लेखकों का सन्दर्भ कहीं छूट गया है। उनका वर्णन यहां किया जाता है। जाटों का उत्कर्ष पृ. 286 लेखक योगेन्द्र पाल शास्त्री, मोतीलाल गुप्ता, मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य को दिन पृ. 214, वालअर हेमिलटन दि. ईस्ट इन्डिया गजेटियर जिल्द 1ए पृ. 233 टॉड जिल्दा पृ. 127–128।

जाटों की उत्पति के संबंध में मनोरंजक कथा ओर भी कही जाति है। वे इस तरह से है कि "महादेव जी के ससुर दक्ष, जो कनखल के राजा थे ने यज्ञ किया इसमें सभी देवताओं, ऋषियों तथा राजाओं को शामिल होने का निमंत्रण दिया, लेकिन महादेव और अपनी सुपुत्री सती को नहीं बुलवाया। उस समय शिव महाराज गंगा के किनारे ऋषिकेश में दो–तीन मील नीचे योग कर रहे थे और सती भी उनके साथ थी। पिता का यज्ञ समझ कर बिन बुलाये वहां चली गई। जब वहां जाकर सती ने देखा की उनके पति का बैठने का कोई स्थान निश्चित नहीं किया और ना ही सती का कोई आदर सत्कार किया गया। यह अपमान देख कर सती अग्नि कुंड में जलकर मर गई। शिवजी को जब ये समाचार मिला तो क्रोधित होकर अपनी एक जटा को उखाडकर पर्वत पर दे मारा। जिससे जटा के दो टूकडे हो गये। एक टूकडे से वीरभद्र नामक योद्धा और दूसरे में से सेना पैदा हुई। महादेव जी ने वीरभद्र को दक्ष और उसके साथियों को दण्ड देने का आदेश दिया। महादेव जी का आदेश सुनकर वीरभद्र अपने गणों के साथ कनखल पहुंचा और राजा दक्ष का सिर काट दिया और उसके साथियों को भी कठोर दण्ड दिया। शिवजी की जटा से वीरभद्र व उसकी सेना पैदा होने से जाट कहलायें। यह कथा किवदन्ती के रूप में ही नहीं रही किन्तु संस्कृत श्लोकों में इसकी रचना की गई है। जो कि देवसंहिता के नाम से है। उस पुस्तक में लिखा है कि विष्णु ने आकर शिवजी को प्रसन्न करके उनके वरदान से दक्ष को जीवित किया और शिवजी और दक्ष का समझौता करवाने के बाद शिवजी से प्राथना की कि महाराज आप अपने मतानुयायी जाटों का यज्ञोपवित संस्कार क्यों नही करा देते ? ताकि हमारे भगत वैष्णों और आपके भगतों में कोई झगड़ा ना रहे। लेकिन शिवजी ने विष्णु जी की इस प्रार्थना पर कहा कि मेरे अनुयायी ही प्रधान है। वीरभद्र की वंशावली में उनके 6 पुत्र हुये। 1. पवनभद्र 2. कलहनभद्र 3. अतिसुरभद्र 4. जखभद्र 5. ब्रह्मभद्र 6. दहिभद्र। पवनभद्र से पूनियां गोत्र, कलहनभद्र से कलहन गोत्र, अंतिसुरभद्र से अंजना गोत्र, जखभद्र से जाखड़ गोत्र, ब्रह्मभद्र से भमरोलीया गोत्र, दहिभद्र से दहियां कहलायें। धौलपुर जाट नरेश भी वीरभद्र की वंशावली में आते है।

Assessing the OUTCOME OF COP-26

- R.N. MALIK

Lot of hype was created around holding the 26th Climate Change summit, called COP26 (Conference of parties) that started its proceedings in Glasgow on 31st October and continued up to 12th November. It was attended by the heads or representatives of 196 countries. Heads of three major emitters of green house gases (GHGs) I.e.China, Russia and Brazil were conspicuous by their absence. Prime Minister Narandra Modi and President Joe Biden represented India and America respectively. John Kerry, US climate envoy had called this conference as ," The world's last best chance to avoid climate hara-kiri." British Prime Minister Boris Johnson also glorified the importance of this conference when he said," Global warming is a doomsday device stripped to humanity."He also suggested to bid goodbye to coal by 2030 in developed countries and by 2040 in the developing countries. America has already decided not to set up any new thermal power plant in future. China, on the other hand, is setting up three new ultra modern thermal power plants every year.

After lot of haggling for two weeks, the conference produced the Glasgow Climate Pact (GCP).The media, as a whole, has dubbed the pact as a weak narrative belying the hopes, aspirations and ambitions of those who are really concerned about the catastrophic future of the earth due to the drastic changes in the climate patterns leading to the triple problems of floods, droughts and cyclones as a result of global warming. Antonio Guterres, UN Secretary General, calls the deal as ,"A compromise with welcome steps." Originally, the conference was called upon to deliberate on three main agendas.

I. That all nations must agree to cut down the consumption of fossil fuels (oil, gas and coal) to reach the status of Net Zero Emissions (NZE) by 2050. China and India agreed to achieve this target by 2060 and 2070 respectively.

2. Both UNFCCC (UN framework convention on climate change) and IPCC (Inter-governmental panel on climate change- the UN body to do research and provide guidance to the nations on the subject of climate change) had discovered that the safe value of rise of global temperatures to prevent or avoid perceptible changes in climate cycle or pattern was 1.5 C and was likely to reach around 2050. This value of temperature rise can be stabilised at this value provided all nations decide to gradually cut down the present level of consumption of fossil fuels to reach the Net Zero Emissions (NZE) status by the year 2050 after switching on to new renewable or non fossil fuels (nuclear or hydrogen fuel) sources of energy. Accordingly, all nations submitted their updated targets to develope alternate sources of energy by 2030 keeping in mind complete achievement of NZEs status by 2050. Indian targets were declared on the floor of the house by the Prime Minister in person. The 2019 level of consumption of three fossil fuels is given below.

Coal=8000 mt per year. China alone consumes 4000mt per year.

Natural gas= 3850 billion cubic metre per year.US alone consumes 830bmc per year.

Crude oil= 100million barrels per day (mbpd).US alone consumes 20mbpd.

1mt= 7.0 barrels

The annual consumption of these three components of fossil fuel produce 50 billion tonnes of GHGs; Carbon dioxide being the principal component. China produces 31% emissions followed by US(16%) and India(5%). European countries under the umbrella of European Union produce 10% of the global emissions. Thus China, US and India together produce 52% of the global emissions. Top 30 consumer countries (G30) produce 90% of the global emissions. So it would have been much better if UNFCC and IPCC concentrate on G30 countries and leave the rest 165 who hardly consume 10% of the fossil fuels per year. In fact many countries like Bhutan have already reached the NZE status and some are about to reach.

The concept of NZEs does not mean that consumption of fossil fuels will be reduced to zero. It only means that:-

The total amount of emissions of GHGs (calculated in terms of CO2 equivalent) from fossil fuels = The amount of CO2 absorbed by the forests, crops, carbon sinks and by new and old technologies of sequestering CO2 to be used for commercial uses.

The basic mistake made by UNFCCC and IPCC is that both did not calculate the values of the two sides of the equation for individual countries of the G30 group. This calculation would have enabled the major emitters to know the extent to which the consumption levels of fossil fuels by the years 2030 and 2050. Alternately, the individual nations could calculate the increase in the forest areas in order to maintain a higher value of consumption of fossil fuels. The World Energy Outlook report for the year 2021 indicates that nations will have to cut down the 2019 consumption levels of fossil fuels by 50% to achieve the NZE status in 2050. In other words, China and India will have to phase out 50% of their thermal power plants by 2050 and the global consumption of crude oil would be reduced to 50 mbpd. Oil and gas producing countries are greatly worried about the arrival of this scenario because their prosperity is entirely based on the sale of crude oil and natural gas.

3. In 2009 climate summit at Copenhagen (COP 15), it was agreed that developed nations would release a sum of $100 billion every year towards the climate financing fund to enable underdeveloped countries to switch on from fossil fuel energy sources to alternate sources of energy. This fund never arrived from wallets of the rich nations and progress of transition of energy from one side to another never picked up. India was at the forefront to take up the cause of the underdeveloped nations to compel rich nations to contribute $ 1.0 trillion towards the climate financing fund. All nations were furious on this issue during the discussions and but somehow their insistence lost the steam and rich nations were able to wriggle out from this imbroglio

Takeaways of the Agreement Draft.

The Glasgow Climate Pact contains following three features in response to the three principle issues raised above.

I. All nations agreed to focus on sticking to the Paris conference (CP21) goal of limiting the temperature rise to 1.5 C from the preindustrial levels due to global warming caused by GHG emissions. But the draft is totally silent whether countries like China and India are bound to reach

NZE status by 2050 or not. Reaching NZEs by 2050 is soul or essence of the Combating Climate Change Movement(CCCM) and the COP 26.

2.(a) All major emitter countries of GHGs (read G30 countries) will scale up and resubmit their NDCs (nationally determined contributions) or targets for cutting down consumption levels of fossil fuels for the year 2030 along with pathways to reach NZE status by the year 2050 in COP27 to be held next year in Egypt. The targets submitted for the COP26 were found inadequate. India had declared that she would be able to develop 500 MW of renewable or green energy by 2030. No other country had made such an ambitious announcement.

2(b) All countries agreed to phase down the unabated coal power and fossil fuel subsidies in line with the coal use by the poor and vulnerable sections of society. The term 'phase out coal' was replaced by 'phase down coal' at the instance of India,China and Iran. India considers this change of terms as a great diplomatic victory though the change of terms does not mean much because the NZE targets do not ask for zero consumption of fossil fuels.

3. Only a perfunctory clause was added in respect of commitment of rich nations to pay the arrears due to the commitment made in COP9 to contribute $100 billion per year towards climate financing fund. Now the draft says," The member nations express regret that rich nations did not fulfill their commitment of contributing $ 100 billion per year towards climate financing fund pledged in COP15 in 2009 and now urge them to start the contribution fresh from now onwards till 2025 and then double the amount of contribution ($200 billion per year) from that year." The term 'urge' instead of a firm direction makes the draft greatly watered down. It is not understood how the underdeveloped countries agreed to accept this clause without a firm assurance from the rich countries notwithstanding the fact that they are signatories to this draft as they were in 2009.

Flaws in the approach-:

Both UNFCCC and IPCC, the two main drivers of the Combating Climate Change Movement, have adopted a flawed approach to take the nations towards the goal of Net Zero Emission status by the year 2050. The key points of the flawed approach are enumerated below.

1. There are only 30 countries that consume 90% of the fossil fuels of the world. Remaining 165 countries are content with using only 10%..Therefore the two UN bodies should have first concentrated their efforts in reducing the consumption of fossil fuels of these 30 countries only.They should hold discussions with them individually to find out to what extent each country is in a position to reduce the fossil fuel consumption without jeopardising the economic growth and then arrive at an agreed figures of NDCs targets for the year 2030. This exercise will greatly avoid the bickerings during the discussion stages and have a smooth sailing in the next summit.

2. Neither UNFCCC nor IPCC have bothered ti calculate Net Zero Emission ratio for each country.

NZE ratio=GHGs added into the atmosphere. GHGs absorbed by crops and forests etc.

The value of this ratio is one when Net Zero Emission status is achieved by the year 2050. You cannot arrive at the accurate value of this ratio because calculation of absorbed value of GHGs is very difficult to make because of many imponderables. Calculation of this ratio will greatly help the major emitter nations to know the amount of reduction required to attain NEZ status in 2050.

3. Combustion of fossil fuels presents three problems simultaneously I.e. air pollution, climate change and depletion of resources. Air pollution has become the most serious problem at the moment. But both UNFCCC and IPCC never talk about this serious problem.China is burning 11 million tonnes if coal daily (half of global consumption) and people are facing very serous health problems and had to resort to closure of schools and offices in many cities of China. Likewise, India consumes 2.0 mt of coal daily and is facing identical problems of air pollution in big cities due to vehicular emissions and Supreme Court is now taking Delhi government to task. Likewise, depletion of these vital resources will be a big problem to be faced by next generations. Chinese coal at the present rate of consumption will not last more than 30 years. Likewise 60 billion tonnes of extractable coal reserves in India will not last more than 70 years. There is a similar limit to develop new oil wells in the middle east countries. So by cutting the consumption of fossil fuels, nations are actually preserving these vital resources for the furniture generations.If all the three issues are highlighted simultaneously, all nations will show more promptness to reduce the consumption levels.

4. Every country has its limitations in developing the renewable resources of energy. Many G30 countries like Japan do not have hydropower potential. European countries do not have enough clear sky days to generate solar power during five winter months of the year. India has very scarce potential for generating wind energy. Therefore the two UN bodies should assess the renewable energy potential while fixing the targets.

5. The COP26 agreement only talks about reducing the coal consumption but remains silent on reducing the consumption of oil and gas; may be due to the pressure of oil and gas producing countries. Combustion of oil produces very obnoxious gases like SO2, NOx and lead oxide. All major cities of the world like Delhi are facing severe air pollution problems and concomitant health hazards due to vehicular emissions. Therefore equal stress should be given to replace existing fleet of cars and small size trucks with electrical vehicles and transferring appreciable part of freight and passenger load of trucks and buses to the railways. The additional requirement of energy to run vehicles electrically will have to be produced from renewables. Electrical vehicles only solve the air pollution problem and do not lower the energy demand.

6. Use of nuclear power and hydrogen fuel can be good substitutes for replacing fossil fuels. People do not allow the setting up of nuclear power plants after the explosion in a nuclear power plant in Japan. Research on developing hydrogen fuel is still in the embryonic stage. Therefore G30 countries need a rethinking on the use of nuclear power and provide more funds to develope hydrogen fuel. Replacement of crude oil with alternate fuels also solves the problem of saving scarce foreign exchange reserves for many developing countries.

7. Bhupender Yadav, leader of Indian delegation at Glasgow, is very right when he said that rich countries were overusing the fossil fuels because of their unsustainable lifestyles. For example, US has 835 cars per thousand people while India has only 37 cars for the same population. Likewise, US has one lac flights from different airports against India's 2900 per day. Therefore the formula for 50% cut on emissions in each country to reach NZE status by the year 2050 is unfair and a new formula needs to be developed based on climate justice.

8. 166 countries with very low consumption of fossil fuels discovered and cried out in the conference that real culprits of triggering climate change are 30 countries (G30) who consume 90% of the fossil fuels and release an equal amount of emissions. Three countries (China, US and India) alone cause 52% emissions. But the climate change does not cause and limit the climatic upheavals to these G30 countries alone and sweeps the whole world. So they (G166) are suffering because of the brazen and profligate use of fossil fuels usurped by G30 countries to sustain their prosperous economies and leaving very little for the future generations. Still they are not ready to pay the damages for their greed and reduce their own consumption of fossil fuels. But their cry was heard and ignored.

It is because of this flawed approach of UNFCCC and IPCC that Combating Climate Change Movement has not gained the required momentum even after 24 years of Kyoto protocol. The pact reached at Glasgow on 14th November is rightly called an agreement better than no agreement. The only achievement of this conference has been to postpone its three main agendas to the next year's conference (COP27) to be held in Egypt.

तबादले, भ्रष्टाचार और सरकार

– कमलेश भारतीय

कोई भी सरकार हो, तबादलों में कर्मचारियों की जान अटकी और फंसी रहती है बिल्कुल जैसे पुरानी कहानियों में पिंजरे में बंद तोते में राजकुमार की जान फंसी रहती थी। तबादला रुकवाने या करवाने या विरोधी को परेशान करने का एक जाल फैला हुआ है सरकारी तंत्र में। आप चाहें तो इसे तबादला माफिया भी कह सकते हैं। कुछेक तबादले जरूर राजनेताओं के करीब होने के नाते बिन खर्ची के होते होंगे नहीं तो पैसा बोलता है तो तबादले का खत खुलता है।

इसका ताजा उदाहरण राजस्थान में देखने सुनने को मिला जब मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बिड़ला सभागार में आयोजित शिक्षक दिवस सम्मान समारोह में शिक्षकों से पूछ लिया कि क्या तबादले के लिए आपको पैसे खिलाने पड़ते हैं? मुख्यमंत्री के इतना पूछते ही शिक्षकों ने भरे सभागार में एकसाथ कहा–हां। इस अवसर पर राजस्थान के शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह जटासरा भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री ने फिर पूछा वही सवाल और फिर आया वही जवाब कि हां, पैसे खिलाने पड़ते हैं। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि कमाल है। यह बड़े दुख की बात है। शिक्षक पैसे देकर तबादलों के लिए लालयित रहते हैं। तबादला नीति बननी चाहिए। शिक्षक को पहले से पता हो कि तबादला कब होना है। न पैसे चलेंगे और न ही विधायकों को तंग करने की जरूरत रह जायेगी।

हालांकि शिक्षा मंत्री ने सफाई दी कि मेरे रहते स्टाफ में से किसी ने एक प्याली चाय भी नहीं पी किसी से। मजेदार बात यह है कि तबादला नीतियां भी इस माफिये के आगे दम तोड़ देती हैं। अगर मुख्यमंत्री किसी और विभाग में भी सवाल करेंगे तो वहां भी जवाब 'हां' में ही मिलेगा।

हर शाख पे उल्लू बैठा है
अंजाम ए गुलिस्तान क्या होगा,,,

यह कोई राजस्थान की बात नहीं है। अपने हरियाणा में भी यदि मुख्यमंत्री भरी सभा में पूछें कि पर्ची–खर्ची चलती है कि नहीं तो ऐसा ही जवाब आयेगा। हालांकि मुख्यमंत्री महोदय हर जनसभा में यह दावा करते हैं कि हरियाणा में पर्ची–खर्ची सिस्टम बंद करवा दिया। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इन्हें ईमानदार मुख्यमंत्री का स्वर्ण पदक दे चुके हैं लेकिन फील्ड में आकर कभी हकीकत जानने की कोशिश कीजिए। पंजाब में एक समय एक ऐसे राजस्व मंत्री रहे जो पुराने जमाने की तरह भेष बदल कर साधारण ग्रामीण बन कर तहसील में जाते और पूछते कि रजिस्ट्री करवाने का कितना खर्चा लगेगा और वे रेट जान जाते। हमारे शहर में पंजाब की पहली महिला तहसीलदार सरोजिनी शारदा के सामने भी ऐसे ही बदले भेष में कटहरे के सामने जा खड़े हुए और उन्हें पहचान कर सरोजिनी ने कहा कि मंत्री जी आइए। आपका स्वागत् है। जब तक मैं यहां तहसीलदार हूं तब तक कोई खर्च नहीं और कागज/दस्तावेज देखकर ही रजिस्ट्री की जाती है। मंत्री उन्हें शाबाशी देकर गये। ऐसे मंत्री और ऐसे तहसीलदार कहां ? यदि मुख्यमंत्री जी भी भेष बदल कर तहसील पहुंचे तो उन्हें खर्ची और पर्ची की असलियत मालूम पड़ जाये। अनिल विज कभी कभी औचक निरीक्षण करने जाते हैं और कुछेक लोगों को निलम्बित करने के आदेश भी देते हैं।

खुद सत्रह बरस शिक्षक रहा हूं। शिक्षक मुख्य सड़क पर आने वाले स्कूल में तबादले से बचते थे। उनका मानना था कि कोई भी मंत्री जब मुख्य सड़क से जायेगा तो कभी भी छापा पड़ सकता है। इसलिए लिंक रोड वाले स्कूल ही चुनते थे। कुछ तबादलों के लिए राजधानी में सचिवालय के चक्कर भी काटने का कड़वा अनुभव है। खैर। बड़ी बात उठाई राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने। बेशक विरोधियों ने इसे वायरल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी पर क्या और किसी मुख्यमंत्री ने शिक्षक सम्मान समारोह में ऐसा सवाल किया ?

यह पैर पखारने की राजनीति ,,,?

राजनीति और पैर पखारने ? क्या एक ही चीज का नाम है? राजनीति में एक फोटो बहुत तेजी से वायरल हो रहा है –हरियाणा के दाढ़ी वाले बाबा का, जिनके पैर उनके समर्थक पखारते हुए दिख रहे हैं। उनकी आरती भी उतारी गयी बताते हैं। यह वाकया उनके एक समर्थक के घर पारिवारिक समारोह में हुआ बताया जा रहा है। इस पर कुलदीप बिश्नोई ने चुटकी ली है कि कंगना के बाद इन महाशय को भी पद्मश्री मिल जानी चाहिए। हालांकि उनके समर्थकों का बचाव में यह कहना

है कि जैन समाज में किसी को सम्मानित करने के लिए गर्म पानी में धोया जाता है। हमारे यहां यह विधि प्राचीन काल से चली आ रही है। उनका सम्मान संत के तौर पर किया गया। यह सम्मान जीवन पर्यंत उनकी साधु समान आचरण की कठिन तपस्या को देखते हुए दिया गया है। इस पर हम कुछ नहीं कहना चाहते। यह किसी की आस्था का विषय हो सकता है लेकिन राजनीति में यह परंपरा बहुत पुरानी है। आपको याद दिला दूं कि पंजाब के मटौर में हुए एक कार्यक्रम में तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्ञानी जैल सिंह को युवराज संजय गांधी की चप्पलें उठाते देखा गया था। बाद में वे राष्ट्रपति पद तक पहुंचे और तब भी चौंकाने वाला बयान दिया था कि इंदिरा गांधी मेरी नेता हैं, वे यदि झाड़ू लगाने को भी कह देंगीं तो लगाऊंगा। सही कविता लिखी थी बाबा नागार्जुन ने :–

रानी हम ढोयेंगे पालकी ,,,,

आपको दूर की नहीं बहुत निकट की याद दिला दूं जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पांव भी एक समाज के लोगों को पखारते देखा गया था। इस तरह पालकियां ढ़ोते, चरण पखारते आम दृश्य बनते जा रहे हैं राजनीति में। घुटनों तक हाथ छुआना तो आम रिवाज बन चुका है।

क्या यह अंध श्रद्धा राजनीति में उचित है ? क्या यह घुटने टेकने राजनीति में जरूरी हैं ? इसके बिना भी क्या होगा राजनीति में ? आप हर कार्यक्रम में घुटने छुआते या पांव पर माथा नवाते समर्थकों को देख सकते हो और कल्पना कर सकते हो कि यह किसी अंधभक्ति से कम है क्या ? राजनीति में प्यार और श्रद्धा होना कोई बुराई नहीं। तमिलनाडु की अम्मा यानी जयललिता भी इसकी बुरी तरह से शिकार हुई। पांव छुआते छुआते शशिकला ने सारा राज–पाट ही छीन लिया था और आखिरी दिनों किसी से मिलने न दिया। यही हाल बसपा की सुप्रीमो मायावती ने कांशीराम का किया। पंजाब से कांशीराम के परिवार के लोग भी उन्हें मिल नहीं पाये। चरण छुआते छुआते राज–पाट ही गंवा बैठे। कितने ऐसे उदाहरण होंगे कि कैसे समर्थक ने भी सत्ता पलट दी साहब की। इसलिए ये पैर पखारने या चरण छुआने से संकोच करना चाहिए नेताओं को।

सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो, अब गोविंद न आएंगे

कविता शेर या कोई प्रसंग हर जगह उपयुक्त होते हैं। छोटी पंचायत हो या सबसे बड़ी पंचायत यानी संसद सब जगह कवितांश या शेर ओ शायरी उपयोग किये जाते हैं। ज्ञानी जैल सिंह, तारकेश्वरी सिन्हा, अटल बिहारी वाजपेयी सभी इनका भरपूर उपयोग करते थे। अटल बिहारी वाजपेयी तो खुद कवि भी थे। इधर इस परंपरा को कांग्रेस की महासचिव व उत्तर प्रदेश की प्रभारी प्रियंका गांधी ने आगे बढ़ाया है चित्रकूट की जनसभा में जहां उन्होंने कवि पुण्यमित्र उपाध्याय की कविता का पाठ किया –सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो, अब गोविंद न आएंगे,,,

मैं 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं' संवाद में अपनी बात रख रही थीं। उन्होंने देश को धर्म व जाति की सियासत से निकाल कर विकास की सियासत की ओर ले जाने के लिए महिलाओं को आगे आने की जरूरत पर जोर दिया। प्रियंका ने कहा कि राजनीति में करूणा भाव लाने, हिंसा और क्रूरता को खत्म करने के लिए आपको आगे आना होगा।

इस तरह प्रियंका ने चालीस प्रतिशत सीटें महिलाओं को देने का वादा भी दोहराया और भूमिका भी बना दी। खैर, इस कविता को राजनीति में अपने फायदे के लिए उपयोग करने पर प्रियंका की आलोचना भी रही है लेकिन प्रियंका ने नारी पर हो रहे अन्याय, शोषण व दबाये जाने को प्रमुखता से इस कविता के प्रसंग से उठा दिया है। चाहे दिल्ली का निर्भया कांड हो या तेलंगाना की डॉक्टर का कांड हो या फिर एसिड अटैक, नारी पर इस तरह के क्रूर अत्याचार, यौन शोषण की घटनाएं पढ़ने/सुनने को मिलती रहती हैं। एक बार चंडीगढ़ प्रेस क्लब में ऐसी ही विचार चर्चा में हरियाणा की एक्ट्रेस मेघना मलिक ने भी अपने बचपन की बात शेयर करते बताया था कि बेशक वे प्रिंसिपल मां की बेटी थीं , फिर भी कॉलेज साइकिल पर जाते समय ऐसे इशारे सहन करने पड़ते थे। इसी प्रकार हमारी चौंपियन मुक्केबाज मेरीकॉम ने भी एक पत्र में जो अपने बेटों के नाम संबोधित किया था, साफ साफ बताया कि एक बार वह हरियाणा के किसी शहर में रिक्शा पर बैठ कर जा रही थी जब उसे छेड़छाड़ का शिकार होना पड़ा। उन्होंने अपने बेटों को दूसरी बेटियों की रक्षा करने का संदेश दिया था।

नारी को अपने देश में देवी बना कर पूजा तो जाता है और नवरात्र पर घर घर इनके चरण पखारे जाते हाथ लेकिन इन्हें नारी के तौर पर सम् मान देना जरूरी है। देवी बनाना या मानना अलग बात है।

प्रियंका गांधी ने एक नारी होने के नाते एक सही संदेश दिया है। बेशक राजनीति प्रेरित ही माना जाये। कभी जयशंकर प्रसाद ने लिखाः–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,,,

पर अब नारी के प्रति श्रद्धा ही नहीं बल्कि उसके अधिकार देने और सम्भान देने की बात उठाई है प्रियंका ने। देखें,

संदेश कहां तक जाता है ,,,?

हर शहर में हर शख्स परेशां सा क्यों है ,,,?

वैसे तो गजल की पंक्ति है –इस शहर में हर शख्स परेशां सा क्यों है पर दीपावली और पराली ने मिल कर जो हालात बना दिये हैं उसे देखकर तो सुप्रीम कोर्ट पूछ रही है –हर शहर में हर शख्स परेशां सा क्यों है ? यह तो बताइए अधिकारियो। क्या सुप्रीम कोर्ट ही बताएगा कि आग लगने पर इसे कैसे बुझाया जाये या बाल्टी कैसे उठाई जाये ? नौकरशाही इतनी जड़ कैसे हो गयी ? यह आग लगने पर ही कुआं क्यों

खोदती है ? पहले साल भर क्या करती रहती है ? वैसे कहना नहीं चाहिए पर लगता है अमृत महोत्सव कार्यक्रमों में व्यस्त है या इवेंट मैनेजमेंट में। सुप्रीम कोर्ट ने टी वी चौनलों के बारे में कहा है कि टी वी पर बहस से भी ज्यादा फैल रहा है प्रदूषण दिल्ली एनसीआर में और नौकरशाही हमारे आदेश की कॉपी की इंतजार कर रही है कि कब आदेश आएं और ये नीचे तक सरका दें कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर यह लागू करें। सभी सरकारें एक दूसरे पर दोषारोपण में व्यस्त हो गयी हैं, समस्या को दूर करने की कोई चिंता नहीं। अपनी बला दूसरे के सिर पर डालने की कोशिश हो रही है।

पराली के जलाने से हर साल प्रदूषण बढ़ता है और कुछ जुर्माने भी लगाये जाते हैं लेकिन इससे डर पैदा नहीं होता। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली, हरियाणा व पंजाब की सरकारों को कड़ी फटकार लगाई है। केंद्र सरकार ने सलाह दी है कि सार्वजनिक वाहन से कर्मचारी ऑफिस आएं तो हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर कह रहे हैं कि ऑड ईवन वाहनों के चलाने पर विचार किया जायेगा। इस प्रदूषण को लेकर राजू श्रीवास्तव ने व्यंग्य किया कि घर में बीबी सांस नहीं लेने देती और बाहर प्रदूषण दम घोंट रहा है। इसी प्रकार एक कॉर्टून आया है जिसमें दिल्ली के मफलरधारी मुख्यमंत्री केजरीवाल कह रहे हैं कि पहले मैं अकेला खांसता था, देखा अब सारी दिल्ली खांस रही है। अब हंस के दिखाओ मुझ पर? हो गया न कमाल?

खैर। हिमाचल जैसे पर्यटन स्थल पर भी जो लोग घूमने जाते हैं वे वहां प्रदूषण फैलाने में कोई कमी नहीं छोड़ते। इसे देखते हुए सामाजिक कार्यकर्त्ता व लेखिका चंद्रकांता सीके ने पालमपुर के आसपास के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में 35000 पौधे लगाये हैं। दूर क्या जाना ? हिसार नगर निगम के कमिश्नर व हमारा प्यार हिसार ने इस वर्ष मिल कर शहर में खूब पौधे लगाये और बांटे जिससे कि शहर ग्रीन हिसार बन सके। ऐसे ही अभियानों की निरंतर जरूरत है नहीं तो प्रदूषण आने वाले समय में इतना बढ़ जायेगा कि मास्क लगाये बिना बाहर न निकल सकेंगे और यही पूछूंगे–

हर शहर में हर शख्स परेशान सा क्यों है.... !

स्थानीय उत्पाद खरीदने का संकल्प जरूरी

– शंभू भद्रा

भारत त्यौहारों का देश है। अब दिवाली आ चुकी है, होली आ जाएगी। देश में त्योहारी सीजन चलता रहता है। दशहरा से दीपोत्सव के त्योहारी सीजन में करीब 2 लाख करोड़ रुपये की खरीदारी होती है। इसमें चीन से आयातित सस्ते सामान का हिस्सा करीब 50 हजार करोड़ रुपये का होता है। लेकिन कैट का अनुमान है कि वोकल फॉर लोकल की पीएम की हालिया अपील और चीनी सामान के अघोषित बहिष्कार के चलते इस त्योहारी सीजन में तकरीबन 50 हजार करोड़ रुपये का घाटा चीन के निर्यातकों को भारतीय बाजार में हो सकता है। कैट के मुताबिक, एक सर्वे से पता चला है कि 20 शहरों में चीन के किसी भी सामानों के लिए ऑर्डर नहीं दिया गया है। इन 20 शहरों में नई दिल्ली, अहमदाबाद, नागपुर, मुंबई, चंडीगढ़, लखनऊ, गुवाहाटी, चेन्नई, बंगलुरू, हैदराबाद, कोलकाता, रांची, जयपुर मदुरई, भोपाल और जम्मू जैसे शहर शामिल हैं। दरअसल, चीनी सैनिकों के साथ गलवान में हुई झड़प के बाद से लगातार देश में चीन के सामानों का बहिष्कार हो रहा है। हालांकि चीन व केंद्र सरकार की ओर से जारी आंकड़े के मुताबिक इस तरह के बहिष्कार के बावजूद भारत व चीन के बीच व्यापार बढ़ा है। चालू वित्त वर्ष के पांच महीने में ही चीन के मुताबिक चीन और भारत के बीच व्यापार 70.1 फीसदी बढ़ा है। भारत के आंकड़ों के मुताबिक, चीन से आयात में 59.13 फीसदी की बढ़त हुई है और अब यह 33.49 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। वहीं, चीन को निर्यात में भी 46. 09 फीसदी वृद्धि हुई है और अब यह 10.41 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। ये आंकड़े बताते हैं कि भारत का व्यापार घाटा चीन के पक्ष में है। इसका मतलब है कि भारत ने चीन से अधिक आयात किया है, जबकि निर्यात कम किया है। इसका आशय है कि चीनी बहिष्कार का अभी व्यापक असर नहीं पड़ रहा है, भारत चाहकर भी कच्चे माल के लिए चीन पर निर्भरता कम नहीं कर पा रहा है। भारत का रिटेल बाजार करीब 33 लाख करोड़ रुपये का है, इसमें ऑनलाइन हिस्सेदारी लगभग 3 फीसदी है।

ये आंकड़े बताते हैं कि भारत के खुदरा बाजार में काफी पोटेंशियल है, इसलिए दुनिया की नजरें भारत पर हैं। मॉर्गन स्टेनली का अनुमान है कि साल 2026 तक भारत में ई–कॉमर्स सेक्टर 14.6 लाख करोड़ रुपये का हो जाएगा। एक अनुमान के मुताबिक चीनी कंपनियां भारतीयों से सालाना पांच लाख करोड़ रुपये, अमेरिकी कंपनियां चार से पांच लाख करोड़ व यूरोपीय कंपनियां करीब दो लाख करोड़ रुपये का मुनाफा कमाती हैं। यह मुनाफा तभी रुकेगा, जब हम स्थानीय निर्मित उत्पाद ही खरीदेंगे। भारतीय युवाओं में स्थानीय उत्पादों के बनिस्पत विदेशी सामानों का क्रेज अधिक देखा जाता है। इन आदतों को बदलना होगा। अर्थशास्त्र का मूल सिद्धांत है कि अगर किसी राष्ट्र, समाज को समृद्ध होना है, तो उसे वेल्थ क्रिएशन के सभी स्तरों–निर्माण से लेकर विपणन व खपत तक की प्रक्रिया में सभी नागरिकों को शामिल होना होगा। वोकल फॉर लोकल में राष्ट्रीय समृद्धि का गूढ़ मंत्र छिपा है। भारत को अगर चीन से मुकाबला करना है और निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है तो 'लोकल' को राष्ट्रीय अभियान बनाना होगा।

बीएसएफ को मिले अधिकार क्षेत्र पर सियासत उचित नहीं

– धर्मेंद्र कंवारी

सीमा सुरक्षा भारत के लिए बड़ा प्रश्न है। चीन और पाकिस्तान से तनाव के चलते सीमा पर हमेशा अतिक्रमण व घुसपैठ का खतरा बना रहता है। चीन के साथ लगती सीमा पर चीनी सैनिकों के अतिक्रमण का तो पाक से लगती सीमा पर सीजफायर उल्लंघन, आतंकी घटनाएं, आतंकी घुसपैठ और ड्रग्स व नशे की तस्करी आदि का खतरा बना रहता है। भारत की सीमाएं चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार, नेपाल, भूटान व अफगानिस्तान की सीमाओं से लगती हैं। चीन से लगती सीमाओं की सुरक्षा भारत–तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के पास है तो पाक व बांग्लादेश से लगती सीमाओं की सुरक्षा बीएसएफ के हाथ में है। भारत–बांग्लादेश के बीच 4096.7 किलोमीटर, भारत–पाकिस्तान के बीच 3323 किलोमीटर सीमा की सुरक्षा का जिम्मा बीएसएफ को मिला हुआ है। बीएसएफ के पास छत्तीसगढ़ और ओडिशा में मौजूद माओवाद पर भी नकेल कसने का भी जिम्मा है। सीमा सुरक्षा की गंभीरता को देखते हुए केंद्र सरकार ने बीएसएफ के अधिकार क्षेत्रों को संतुलित किया है, कहीं बढ़ाया है तो कहीं घटाया है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आतंकवाद और सीमा पार से अपराधों पर लगाम लगाने के मकसद से सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) को सीमा से 50 किमी के दायरे में सर्च ऑपरेशन, गिरतारी और जब्ती की शक्तियां दी हैं। ये शक्तियां बीएसएफ को भारत–पाकिस्तान और भारत–बांग्लादेश के बीच अंतरराष्ट्रीय सीमा के 50 किलोमीटर के दायरे में दिया गया है। यह शक्तियां मिलने से बीएसएफ अब मजिस्ट्रेट के आदेश और वॉरंट के बिना भी अपने इस अधिकार क्षेत्र के अंदर गिरतारी और तलाशी कर सकती है। अभी तक बीएएसफ को पंजाब, पश्चिम बंगाल और असम में 15 किलोमीटर के दायरे में सर्च और अरेस्ट करने का अधिकार था। गुजरात में अधिकार क्षेत्र 80 किमी तक था, अब कम होकर 50 किमी हो गया है, जबकि राजस्थान में दायरा क्षेत्र पहले की तरह ही 50 किलोमीटर रखा गया है। पांच पूर्वोत्तर राज्यों मेघालय, नगालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा और मणिपुर के लिए यह दायरा घटाकर 80 से 20 किलोमीटर कर दिया गया है। बीएसएफ के अधिकार क्षेत्र बढ़ाने की मांग काफी समय से की जा रही थी, जो अब पूरी हुई है।

कम अधिकार क्षेत्र होने से कोऑर्डिनेशन में समस्या होती थी। 15 किमी ही अधिकार क्षेत्र होने से घुसपैठिया को पकड़ना कठिन हो रहा था, क्योंकि वह एक दिन में इतनी दूरी पार कर भारत के अंदरुनी हिस्से में घुस आता था। नशे के तस्करों को पकड़ने में अधिक कठिनाई होती थी। इस बदलाव से ये समस्या भी दूर होगी। भारत ने बार–बार पाकिस्तान को बेशक दो टूक चेतावनी दी है, लेकिन वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आता है। हमें अपने सुरक्षा बलों पर विश्वास करना चाहिए कि वे अपने अधिकारों का नागरिकों के खिलाफ दुरुपयोग नहीं करेंगे। हालांकि सेना को मिले विशेष सशस्त्र बल अधिकार के दुरुपयोग के अनेक मामले सामने आए, जिसका शर्मिला इरोम ने 12 साल से अधिक समय तक अन्न त्याग कर विरोध किया था। केंद्र सरकार को सुरक्षा बलों को अधिकार देते वक्त हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसका अपने ही नागरिकों के खिलाफ दुरूपयोग न हो और जवान पुलिस की तरह आचरण न करने लगे। सुरक्षा के मद्देनजर फैसले लेते वक्त नागरिकों को संभावित परेशानी न हो, इसका सरकार को ध्यान रखना चाहिए। सुरक्षा के मुद्दे पर सियासत नहीं होनी चाहिए। जैसा पंजाब व पश्चिम बंगाल कर रहे हैं। यह सही है कि संघीय ढांचे में कानून व्यवस्था राज्य का विषय है और इस पर राज्य कानून बना सकते हैं, लेकिन सीमा सुरक्षा सुनिश्चित करना केंद्र का दायित्व है। राज्य यह समझें।

इंटरनेट पर बाल यौन सामग्री को रोके सरकार

– विनोद कौशिक

इंटरनेट सूचनाओं तक पहुंच का जितना आसान बनाया है, उतना ही आसान उसने बाल यौन सामग्री तक लोगों की पहुंच को भी सरल बना दिया है। इंटरनेट पर बाल यौन कंटेंट का ऐसा संजाल है कि इसके एडिक्ट लोग बाल यौन अपराध में संलिप्त हो रहे हैं। वर्चुअल वर्ल्ड में उपलब्ध बाल यौन कंटेंट को देख, पढ़ कर लोग बच्चों के यौन शोषण के प्रति आकर्षित होते हैं और धीरे धीरे मानसिक रूप से बीमार होते जाते हैं। तकनीकी प्रगति और इंटरनेट कंपनियों और सरकारों द्वारा प्रभावी कार्रवाई की कमी के कारण बाल यौन शोषण सामग्री व्यापक रूप से ऑनलाइन उपलब्ध है। अपनी यौन कुंठा को पूरा करने के लिए ऐसे लोग अपराध के दलदल में धंसते चले जाते हैं। जो बच्चे या किशोर यौन शोषण के शिकार होते हैं, इसका उनके तन व मन के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इंटरनेट सूचनाओं तक पहुंच का जितना आसान बनाया है, उतना ही आसान उसने बाल यौन सामग्री तक लोगों की पहुंच को भी सरल बना दिया है। इंटरनेट पर बाल यौन कंटेंट का ऐसा संजाल है कि इसके एडिक्ट लोग बाल यौन अपराध में संलिप्त हो रहे हैं। वर्चुअल वर्ल्ड में उपलब्ध बाल यौन कंटेंट को देख, पढ़ कर

लोग बच्चों के यौन शोषण के प्रति आकर्षित होते हैं और धीरे धीरे मानसिक रूप से बीमार होते जाते हैं। तकनीकी प्रगति और इंटरनेट कंपनियों और सरकारों द्वारा प्रभावी कार्रवाई की कमी के कारण बाल यौन शोषण सामग्री व्यापक रूप से ऑनलाइन उपलब्ध है। अपनी यौन कुंठा को पूरा करने के लिए ऐसे लोग अपराध के दलदल में धंसते चले जाते हैं। जो बच्चे या किशोर यौन शोषण के शिकार होते हैं, इसका उनके तन व मन के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इंटरनेट वॉच फाउंडेशन के अनुसार, बच्चों द्वारा 'स्व–निर्मित' यौन सामग्री में वृद्धि एक और चिंताजनक प्रवृत्ति है। साइबर बुलिंग, उत्पीड़न और चाइल्ड पोर्नोग्राफी जैसे बाल शोषण के नए रूप भी सामने आए हैं। पोक्सो के तहत दोषसिद्धि की दर केवल 32 फीसदी है जिसमें विगत 5 वर्षों के दौरान औसतन लंबित मामलों का प्रतिशत 90 प्रतिशत है। सुरक्षित ऑनलाइन वातावरण बनाने तथा बच्चों को सुरक्षित रखने को काम करने, दुर्व्यवहार के खिलाफ रोकथाम को प्राथमिकता देने की जरूरत है। कानूनी ढांचे, नीतियों, राष्ट्रीय रणनीतियों और मानकों के बेहतर कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिये माता–पिता, स्कूलों, समुदायों, एनजीओ भागीदारों तथा सरकारों के साथ–साथ पुलिस व वकीलों को शामिल करने को एक व्यापक आउटरीच प्रणाली विकसित किये जाने की आवश्यकता है। सरकार को इंटरनेट पर बाल यौन सामग्री प्रतिबंधित करना चाहिए।

बिजली संयंत्रों को बनी रहे कोयले की आपूर्ति

– महेंद्र सिंह

देश में अगर बिजली संकट गहराएगा तो अर्थव्यवस्था को गहरी चोट लगेगी। कोरोना महामारी से प्रभावित देश की अर्थव्यवस्था तेजी से पटरी पर लौट रही है। इसके लिए बिजली की आपूर्ति का सुचारू बने रहना जरूरी है। सरकारी कंपनी गेल और निजी कंपनी टाटा के गैस व कोयले की कमी से बिजली आपूर्ति बाधित होने के संदेश के चलते आने वाले वक्त में बिजली संकट होने की आशंका व्याप्त हुई है। गेल ने गैस आपूर्ति में कमी की चेतावनी दी थी तो टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड ने उपभोक्ताओं को एसएमएस भेजकर संभावित बिजली कटौती को लेकर सचेत किया था। यूं तो केंद्र सरकार के ऊर्जा मंत्री आरके सिंह और कोयला मंत्री प्रह्लाद जोशी ने कहा है कि देश में कोयला की कोई कमी नहीं है, इसलिए बिजली संकट गहराने का सवाल ही नहीं है। सिंह ने कहा कि "संकट न तो कभी था, न आगे होगा। पहले की तरह कोयले का 17 दिन का स्टॉक नहीं है लेकिन हमारे पास चार दिन का स्टॉक है।" प्रह्लाद जोशी ने कहा कि "बिजली आपूर्ति बाधित होने का बिल्कुल भी खतरा नहीं है। बिजली उत्पादक संयंत्रों की जरूरत को पूरा करने के लिए कोल इंडिया के पास 24 दिनों की कोयले की मांग के बराबर 43 मिलियन टन का कोल का पर्याप्त स्टॉक है।" लेकिन आंकड़े कोयले व गैस की आपूर्ति की कमी की ओर इशारा कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े बिजली उत्पादन संयंत्र ऊंचाहार के छह यूनिट में उत्पादन बाधित है। ऊंचाहार ताप बिजली संयंत्र से उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तरांचल को बिजली की आपूर्ति की जाती है। इस संयंत्र की किसी यूनिट के बंद होने से इन राज्यों में बिजली आपूर्ति पर असर पड़ेगा। उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब के कुछ हिस्सों में बिजली की कटौती हो भी रही है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में कोयले की कमी के कारण बिजली संकट और ब्लैकआउट के खतरे को देखते हुए इन राज्यों की सरकारों से केंद्र सरकार को लिखित पत्र भेजकर कोयले की आपूर्ति की मांग की है। भारत में कोयले से चलने वाले 135 पावर प्लांट में से आधे से ज्यादा ऐसे हैं, जहां कोयले का स्टॉक खत्म होने वाला है। इनमें से कई पावर प्लांट में केवल 2–4 दिन का ही स्टॉक बचा है। कोयला आधारित संयंत्र, थर्मल पावर प्लांट की कैटेगरी में आते हैं। भारत में इस्तेमाल होने वाली बिजली की आपूर्ति 71 फीसदी थर्मल पावर प्लांट्स के जरिए की जाती है। भारत ही नहीं चीन, अमेरिका, यूरोपीय यूनियन, रूस, लेबनान आदि देश पहले से ही ऊर्जा संकट का सामना कर रहे हैं। लेबनान अंधेरे में डूबा है। चीन की बढ़ती ऊर्जा भूख ने आपूर्ति तंत्र में असंतुलन पैदा कर दिया है।

यूरोप में नेचुरल गैस के उत्पादन में कमी, कोरोना के दौरान कोयले के उत्पादन की सुस्त रतार, पिछले 18 महीने में जीवाश्म ईंधन को निकालने की दिशा में बहुत कम काम, चक्रवाती तूफानों के चलते खाड़ी देशों की कुछ तेल रिफाइनरी का बंद होना, रूसी गैस निर्यात में गिरावट, चीन और ऑस्ट्रेलिया के तनावपूर्ण संबंध व समुद्र में कम हवा चलने से दुनियाभर में ऊर्जा संकट गहरा गया है। भारत के संदर्भ में देखें तो आयातित कोयला कीमतों के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने की वजह से आयातित कोयला आधारित बिजली संयंत्र अपनी क्षमता के कम बिजली का उत्पादन कर रहे हैं। केंद्र सरकार को चाहिए कि राज्यों के बिजली संयंत्रों को कोयले की आपूर्ति लगतार बनाए रखे, ताकि बिजली उत्पादन रुके नहीं। केंद्र को राज्यों की शिकायतें भी दूर करनी चाहिए।

क्या वैदिक जर्तगण ही परवर्ती भरतगण थे?

– डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

वैदिक जरित गणों किंवा जरतों अथवा भरतगणों का मूलाधिवास मध्येशिया ही था। डॉ. अतल सिंह खोखर उज्बेकिस्तान के वर्तमान फरगना क्षेत्र को भी भरतगणाः संस्कृत का मानते हैं। मध्य ऐशिया को आर्यों के उत्प्रावास की मूलभूत भूमि मानने में तो अब लगभग किसी को भी कोई आपत्ति कहां है। लेकिन मध्येशिया के पांच देशों का भी यदि हम उपविभाजन करें तो कजाकिस्तान और तजाकिस्तान दक्षिण मध्य ऐशियाई देश ही ठहरते हैं। तो उज्बेकिस्तान ही मध्य ऐशिया का मेरुदण्ड सिद्ध होता है। तुर्कमेनिस्तान उसका दक्षिण पश्चिमोत्तरी भूभाग है तो किर्गस्तिान ही पूर्णतः पश्चिमी पादप्रदेश सिद्ध होता है जोकि कालासगर पर्यन्त फैला हुआ है। अधिकांश इतिहासविदों ने इसी समस्त सुविस्तृत भूभाग को सीथीया भी माना है। एक भारतीय मत उसको सिन्धु का डेल्टा या सिस्तान को ही मानता है।

संभवतः सिथिया शिवि या शक लोगों का ही तो मूलाधिवास है। कज हो सकता है कि शक शब्द का ही वर्ण विपर्यय है; जैसे कि लोक में कई बार चाकू को काचू और मतलब को भाषा–विकार से मतबल भी बोला जाता है। शक से ही वर्तमान भारत में संस्कृत का शाक्य संबंध–विशेषण शब्द बना है तो उसी का उपभ्रष्ट रूप काछी भी है। अतएव शकों को ही कालांतर में सूर्यवंशी या सूर्योपासक आर्य मग–ब्राह्मणों ने अपने द्वारा रचित बाल्मीकीय रामायण एवं पुराण–साहित्य में बताया है। भाषायी, परिवर्तन के चलते ही शक ही कुश तक में भी बदल सकते हैं। क्योंकि गुजरात के द्वारिका–ओखा नगर का भी प्राचीन नाम हमें कुश–स्थली ही मिल रहा है। क्योंकि भारतीय शक संभवतः ईरानी सीस्तान से ही आये हुए हैं। शायद शकराष्ट्र शब्द को ही बाद में नागर या रावल–ब्राह्मणों ने उसी को सुराष्ट्र या सौराष्ट्र नाम दिया है। क्योंकि गुजरात से सिंध के हाजीपीर दर्रे से ही ईरानी शकों का प्रवेश ईसा पूर्व की शताब्दियों में हुआ था। वहीं से वे नासिक (महाराष्ट्र) और पैठण (औरंगाबाद) तक गये हैं।

कजाकिस्तान अथवा शकस्थान चीन के त्यानश्यान वैदिक मंजूवान पर्वत से संलग्न है। उसके पश्चिम में किर्गिस्तान स्थित है तो दक्षिण–पश्चिम में तुर्कमेनिस्तान (रूसी) स्थित है तो ठीक उसके मध्य में तरीम–घाटी या सीर–दरिया (पौराणिक क्षीर–सागर) विद्यमान है। जहां पर फरगना या वैदिक भरतगण कीी नित्य निवास करते थे। यहां पर भी दो सभ्यताएं थीं– एक सभ्यता का नाम आर्दोगोन था जो दक्षिण, मध्य एशिया में अवस्थित थी तो उत्तर में स्थित दूसरी सभ्यता का नाम 'मर्गियाना–बैक्ट्रिया' थी। यह संपूर्ण यभ्यता डॉ. रामशरण शर्मा के मतानुसार लगभग तीन हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में सुविस्तृत थी।

इस सभ्यता के लोग भूगर्भ में घर बनाकर ही निवास किया करते थे। इसीलिए झील या भूतल में नित्य निवासी होने के ही कारण उनको जर्त (गर्त) या जरित जैसा वैदिक नाम मिला था। डॉ. अतल सिंह खोखर वैदिक भरतगणों को ही प्रकारान्तर से पूर्ववर्ती जरितगण ही मानते हैं। बल्कि महाण्डित राहुल सांकृतायन ने तो वैदिक सप्तसिन्धु अथवा सेमरिच्चे को भी वहीं पर पाया है। क्योंकि वहीं पर स्थित बालखस वलक्ष (श्वेत्) झील से ही वे सात सरिताएं चारों दिशाओं में प्रवाहित होती है जोकि अल्टाई–पर्वत से ही प्रस्फुटित हुई है। कजाकिस्तान की वर्तमान राजधानी भी अल्टाई नामक नगर ही है। जोकि साईबेरिया और उज्बेकिस्तान के मध्य में स्थित है। साईबेरिया और तुर्कमेनिस्तान की सर्वाधिक लंबी (चार हजार मिलोमीटर) रेलवे लाईन भी तो यहीं से होकर के गुजरती है। सोवियत संघ राज्य काल में ही इसका निर्माण हुआ था।

कजाकिस्तान की भाषा ताजिक अथवा ईरानी व्यापारियों की ही अधिकतर है तो दूसरे क्रम पर वहां पर यूक्रेनी भाषा ही बोली जाती है। तीसरे क्रम पर वहां रूसी तातारी हैं तो चौथे क्रम पर मंगोलियन भाषाभाषी लोग ही वहां पर निवास करते हैं। अतएव उसे यदि मध्य एशिया का चतुष्पथ या संगम किंवा जंक्शन भी कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। क्योंकि वहीं से पूर्ववैदिक काल में आर्य अभिजन किंवा शकार्य लोग चारों दिशाओं में फैले थे। जब तभी वे पशुचारी अवस्था में चारागाहों की खोज में लूट–मार किया करते थे। इसीलिए शकों या शकस्तानियों को ही फासवी (अरबी) में कजाक या डाक कहा गया है। जैसा कि, मीर नजीर अकबरावादी कवि ने भी लिखा था–

''कज्जाक अजल का लुटे हैं, जब लाद चले हैं बंजारा।''

अर्थात पुरातन युग में जो भी बंजारे या व्यापारी (ताजिक) (ईरानी) थे, उनको वे कज्जाक (शकस्थानी लोग) धावे या छापे मार–मारकर लूट लिया करते थे। क्योंकि वहां पूर्णतः पर्वतीय एवं मरूस्थलीय भूभाग ही था। वहां पर सिवाय जौ या कपास के लिए और कुछ उत्पन्न ही कहां होता था। आश्चर्य का विषय यही है कि वैदिक आर्यों का भी प्रमुख भोजन यव (जौ) एवं प्रधान पेय सोमरस या भांग ही था। वैदिक साहित्य में उसका प्राप्ति–स्थल मंजूवान पर्वत को ही बताया गया है जोकि वर्तमान काल में चीन की त्यानश्यान पर्वत–मालाएं ही हैं। वहीं से निर्गत होने वाली जल–धाराओं के साथि सोमरस प्रवाहित होकर शकार्यों के पास पहुंचता था।

त्यानश्यान पर्वत–श्रृंखला एक ओर पामीर–पर्वत से संलग्न है तो वहीं से भारतीय उपमहाद्वीप की कराकोरम पर्वत–माला भी

शुरू होती है। हिंदूकुश क्षेत्र का विस्तार भी वहीं तक है। अफगानिस्तान की भी 38 किलोमीटर सीमा चीनी सिक्यांग (सिचुयान) प्रदेश से मिलती है। बल्कि तजाकिस्तान तो अविभाजित भारत से केवल सात किलोमीटर के अंतराल पर ही अवस्थित है। वह नोमैन्स लैंड का गलियारा भी अंग्रेज–सरकार ने इसलिए रखवाया था क्योंकि कभी सोवियत संघ उधर से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रविष्ट हो सकता था। पाकिस्तान का क्वेटा और अफगानिस्तान का हजारा (कंबोज) प्रदेश भी भारतवर्ष के हिमालय की पश्चिमी पर्वत–श्रृंखला पर ही तो अवस्थित हैं।

अतः डॉ. अतल सिंह खोखर एवं डॉ. चन्द्रवीर सिंह जैसे भूगोलवेत्ता वैदिक जर्तगणों किवां महाभारत के भरतगणों का उत्प्रवास मध्य एशिया के उसी भूभाग से मानते हैं बल्कि यदि यही शकार्य ही पश्चिम–दक्षिण में तुर्कमेकिस्तान के मार्ग से ही अजबेराईन एवं आर्मेनिया से तुर्की (अनातोलिया) तक के ट्रांस–काकेशियन क्षेत्र में फैले है। फिर वहीं से वे भूमध्यसागर को पार करके क्रीट–द्वीप तक गये होंगे। डॉ. अतल सिंह खोखर वैदिक जरिक से ही क्रीट एवं ग्रीस (यूनानी) के लोगों की उत्पत्ति स्वीकार करते हैं। वहीं से पूर्व में यदि नील नदी के उत्संग में उन्हें वैदिक जरितगणों ने मिस्र या ईजिप्ट की सभ्यता को सरसाया था तो वही लोग ईरानी अलबुर्ज पर्वत–माला को पार करके बैबीलोनिया और मैसोपोटामिया तक भी गये हैं। जिट्टी से ही जिप्सी शब्द बना है मिस्र का ग्रीक नाम इसलिए इजिप्ट ही है, यहां पर ज्ञातव्य है।

जो मार्ग्यना–बैक्ट्रिया का दक्षिण–पूर्वी मार्ग मध्य एशिया में थी, जहां पर कि वर्तमान में उज्बेकिस्तान और अफगानिस्तान का बैक्ट्रिया (वैदिक बाह्लीक) प्रदेश मौजूद हैं। उसी मध्य मार्ग से भरतगण किवां वैदिक जरितगण (जाट लोग) भारतीय भू भाग के गांधार या पेशावर प्रदेश में प्रविष्ट हुए थे। वैसे तो गांधार प्रदेश का पश्चिमी क्षेत्र यदि कंधार (कंदहार) था, जिसकी राजधानी कभी पुष्कलावती या वर्तमान काल की चारसद्दा ही थी। वहीं से पुष्कर ब्राह्मण लोग भारत के सिंध एवं राजस्थान में आकर आबाद हुए हैं। संभवतः वे ईरान के सिस्तान से भी आगत हो सकते हैं। क्योंकि पुष्कर तीर्थ–स्थान में उनकी धर्मशाला पर शाकद्वीपीय मग या शक–ब्राह्मण ही लिखित है। ईरानी सीस्तान किवां शकस्थान से ही ये जूटी लोग रूस से आने वाले कसाईट (खत्री) कबीले द्वारा 1650 ईसा पूर्व में आक्रान्त होने पर चीनी तुर्किस्तान किंवा वर्तमान सिक्यांग प्रदेश में प्रवजित हो गये थे। वैसे डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार जैसे विश्व–विश्रुत इतिहासकार की मूल मान्यता यही है।

वही चीनी तुर्किस्तान लोग गोभी और मकराना के शीतल एवं शाद्वल मरूस्थल में प्रवास करने के कारण ईरानी जूती या जूटी से उनका चीनी नामकरण यूची (कुषाण) हो गया था। चीनी तुर्किस्तान या सिक्यांग प्रांत के उत्तर में खोतान और काशगर स्थित हों, जिनके प्राचीन नाम हमें जटाह और अग्नि–शहर बौद्धकाल से लेकर मौर्यकाल में मिल रहे हैं। तो उसके उत्तर में स्थित पर्वतीय प्रदेश का नाम ही कूची या सूची है। वहां पर जब ईसा की आरंभिक शताब्दियों में भयंकर अकाल अनावृष्टि के कारण पड़ गया था तो कूची में बसने वाले कूचर (गूजर) या खजर लोगों के लिए चरागाह कम पड़ गये थे। ऐसी स्थिति में उन्होंने अपने दक्षिणी एवं पश्चिमी समतलीय भूभाग खोतान (जटाह) और काश्गर (अग्नि–शहर) पर अचानक आक्रमण कर दिया था। ऐसी स्थिति में वही यूची या जूटी तुर्क लोग अपने हिम–धवल तुसार–मण्ड़ित पुण्य प्रदेश का अवांछित रूप से पूर्णतः परित्याग करके नीचे के उज्बकिस्तान या ख्मेर (सुमेर) क्षेत्र में आ बसे थे। महापण्डित राहुल सांकृतायन के मतानुसार उन्हीं चीनी यूची या जुटी तुर्क या तोखारी लोगों ने सोलहवीं शताब्दी में फरगना (भरतगण) को तैमूलंग के पौत्र पुत्र उज्बेक के नाम पर ही उज्बेकिस्तान नाम दिया था। 1610 ई. में।

बाद में फिर उन्हीं यूचियों के पांच कुलों की समवेत संज्ञा ही कुईषाण या कुषाण हो गई थी। उनके परम प्रतापी कनिष्टक सम्राट ने ही ईसा की पूर्व 78 ईस्वी में बैक्ट्रिया (बाह्लीक) प्रदेश में स्थित शकों को पूर्णतः पराजित करके भारतीय पंजाब में धकेल दिया था। यहां पर यह कहना असंगत नहीं होगा कि उन्हीं शकस्तानी शकों ने ही महाभारत कालीन और पाणिनीकालीन मद्रदेश को निज नाम से शाकल–नगरी नाम दिया था और वर्तमानकालीन स्यालकोट को अपनी राजधानी भी बनाया था। संभवतः सहगल और सैंगर जैसे खत्री एवं राजपूत कुलनाम उसी वंश–वृक्ष की ही शाखाएं हैं। तो जाटों में भी सहरावत–रावत और शराब एवं राव जैसे गोत्र (गण) उसी शकार्य वंश के ही वंशधर हैं। क्योंकि शकों के तीन ही प्रमुख वंश क्षयरात और न्हपान तथा चेष्टन थे। अतएव कायस्थों एवं जाटों के श्रीवास्तव और सहरावत (शर्यावत) जेसे गण–गोत्र उसी शक–मूल के हैं।

वैसे भी इन्हीं शकार्यों ने ईसा पूर्व लगभग चार से छः हजार वर्ष पूर्व में वक्षु (ऑक्सस) नदी–घाटी में अन्नोत्पादन का पावन पुरोगम प्रारंभ किया था। वहीं से वह कृषि–व्यवस्था (जाटू) सिंधु सभ्यता के हड़प्पा–मोहन जोदड़ों तथा मेहरानगढ (ब्लूचिस्तान) तक भी चलकर आयी थी। लेकिन यहां पर थोड़ा–सा संशय है क्योंकि राखीगढ़ी से मानव–शरीर का जो ढांचा मिला है; उसके गुणसूत्र या तो द्राविडीयन हैं; या फिर भूमध्य सागरीय है– मेडिटेरियन। वे नार्डिक आर्यों के तो नहीं है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि वैदिक आर्य सप्त–सिंधु क्षेत्र में ईसा पूर्व दूसरी सहस्त्राब्दी 1500–1200 ईसा पूर्व में ही प्रविष्ट हुए होंगे। जबकि सिंधु–सभ्यता का प्रौढ–काल 2500 ईसा पूर्व से दो हजार ईसा पूर्व तक का ही पुरात्तत्व वेत्ताओं ने माना है। लेकिन ऋग्वेद में जो इन्द्र का एक नाम पुरन्दर है और उसके द्वारा शम्बर के एक सहस्त्र पुरों के विध्वंस का जो भी विकराल वर्णन है; वह तो वैदिक आर्यों के प्रथम जत्थे को ही हड़प्पा या सिंधु सभ्यता का विध्वंसक ठहराता है। जहां पर कि इन्द्र ने सोम के लिए

सिंधु (हिंदू) देश को विजित किया है और दस हजार काले दासों एवं छः हजार काली दासियों का भी निर्ममतापूर्वक नरसंहार किया है। फिर परुषणी या ईरावती (रावी) नदी के तट पर ऋग्वैदिक आर्यों का जो और पुरु एवं तुर्वसु भी शामिल हैं। जोकि जर्त्तायों या भरतगणों के ही पावन पूर्वज हैं। पांचजन्य पंचकृष्टि या किसान कुल ही हैं। अतः यहां आकर जाटों का संबंध ऋग्वैदिक आर्यों के साथ सीधा कहां जुड़ता है। लेकिन अपने वर्गीय हित–लाभों के लिए संघर्ष स्वकुल में भी संभव हैं। अतएव वैदिक जर्तगण या भरतगण एक ऋग्वैदिक कालीन ही हो सकते हैं।

जैसे कि अंग्रेज एवं फ्रेंच परस्पर में गोथिक या जर्मन जाट रक्त से ही संबंधित थे, लेकिन भारतवर्ष को जीतने के लिए उनके मध्य में भीषण जल–युद्ध हिंद महासागर में हुआ था। अतएव एक ही रक्त–वंश के व्यक्तियों के बीच में कालांतर में सत्ता–संघर्ष होना कोई अस्वाभाविक घटनाक्रम कहां है। संयोग से कजाकिस्तान में हमें वर्तमान में भी जर्मन गाथों के भी वंशधर मिल रहे हैं और रूस में भी उनकी संख्या काफी है। यही लोग उत्तरी साईबेरिया और मंगोलिया की ओर से आये दिन होने वाले आक्रमणों से परेशान होकर आगे काला–सागर को पार करके यूगोस्लाविया (सर्बिया) और जर्मनी से लेकर आस्ट्रिया–हंगरी और चैकोस्लाविया तक भी चले गये थे। बल्कि रूस से उजड़कर बाल्टिक सागरपारीय प्रदेशों में जाकर स्कैण्डिनेवयन देशों में भी बस गये थे। क्योंकि वहां के धर्मग्रंथ एड्डा में ओदिन नामक जाट या गाथ पूर्वज के उधर पहुंचने की आत्मस्वीकृति अंकित है। वह तो ईसा पूर्व लगभग पांच शताब्दी में उधर प्रवजित हो गया है। स्वीडन और डेनमार्क (धेनु मार्ग) और स्केण्ड्रनेविया के अलावा नार्वे और फिनलैंड को भी नार्डिक आर्यों का आदि अधिवास माना जाता है क्योंकि ये अति शीत प्रधान देश थे; अतएव इन्हीं से उजड़कर गाथार्य (जर्तगण) मध्य एवं पूर्व यूरोप (युगोस्लाविया और जर्मन) से लेकर पश्चिम में फ्रांस और स्पेन तक भी धीरे–धीरे जलमार्ग से जा बसे थे। फ्रांस (गॉल) देश से ही उजड़कर नारमन और सैक्शन लोग ही इंग्लैंड में ही जाकर रोम–साम्राज्य की सेनाओं में भर्ती होकर जा बसे थे। जबकि जूट्स और ऐंजल तथा वेल्ज लोग वहां पर और भी पहले रोमन सम्राट द्वारा बसा दिए गये थे। किसान कुलों के रूप में लगभग प्रथम से चौथी शताब्दी के आसपास।

अतएव रोम पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पांचवी–छटी शताब्दी में पतन के पश्चात ही इंग्लैंड, स्पेन, पूर्तगाल और फ्रांस तथा इटली एवं जर्मन प्रशिया तथा आस्ट्रिया पृथक–पृथक देश बने थे। पश्चिमी साम्राज्य की रक्षार्थ चौथी–पांचवीं शताब्दी में होने वाले हूणी–आक्रमण को रोकने का भी पूर्णतया प्रयास और पराक्रम अलार्क नामक जाट योद्धा ने दिखाया था। इसीलिए सम्राट थियोडोरस (दशरथ) ने उसको अथवा दामाद बनाकर आस्ट्रिया और इंगरी का राज्य भी डेन्यूब नदी तट पर उसे सौंप दिये थे। यूरोपीय महाद्वीप के जाट भी कई शाखाओं में बंट गये थे। जैसे कि जर्मन–गाथ तो आस्ट्रिया के आस्ट्रोगाथ कहे गये थे तो इटली या रोम के दलदल भेनिस में बसने वाले जाट ही (वेल्स) में वे भिसीगाथ कहे गये थे। राजस्थान के सर्वप्रथम इतिहास लेखक कर्नल टॉड ने भी भारतीय जाटों का रक्त–संबंध रोमन गाथों के साथ स्वीकार किया है और उनका आदि अधिवास उन्होंने भी कश्यप सागर के पूर्व दक्षिण में स्थित वक्षु नदी घाटी एवं सीथिया को ही माना है।

हमने पीछे बताया था कि जो ईरानी जुटी या गुली लोग रूसी कसाईटों किवां खत्रियों के आक्रमण के पश्चात चीनी तुर्किस्तान की ओर उत्तर–पूर्व में विस्थापित हो गये थे, वही हूणों या वैदिक शकों रूपी गोचारी (गूजर) लोगों के एकाएक आक्रमण के कारण बैक्ट्रिया (वाह्लीक) में आकर आबाद हो गये थे ईसा पूर्व की आरंभिक शताब्दियों में, वही लोग जोकि तुखारी या तुर्क थे और उनकी भाषा भी इण्डोआर्यन ही थी। उन्हीं को यहां पर कुषाण कहा गया था। वही लोग गांधार से लेकर मथुरा तक के भी शासक बन गये थे। सम्राट कनिष्क की एक भग्न प्रस्तरप्रतिमा आज भी मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है। उसकी वेशभूषा इण्डोग्रीक हैं। क्योंकि सिकंदर के साथ आये हुए ग्रीकों का ही शासन तब पार्थिया–पर्शिया ईरान। और मीडिया या मंड देश पर था। बैक्ट्रिया या उत्तरी अफगानिस्तान तक में भी वही शासक थे। अतएव वहीं आकर कुषाणों ने शकों को अंदर सिंध और पंजाब की ओर भारत में अंदर धकेला था तो ग्रीकों या वैदिक जरितों के साथ उनके रक्त–संबंध भी वहीं पर स्थापित हो गये थे, परस्पर में शादी–विवाह रचाने के कारण।

उन्हीं जर्तगणों के अश्मक या असियाग अभिजन का एक क्षत्रप से सम्राट बनने वाला चन्द्रगुप्त पहले ही सेल्युकस की पुत्री हेलन या कार्नेलिया के साथ विवाह रचा चुका था। आज भी मलिक उपाधिधारी गठवाला गोत्र के जाट लोग अपनी लल–तुखार या तोखारी ही बतलाते हैं। अतएव वे तूरानी तुर्क और कुषाण लोग कालांतर में जाट जनगण में ही सम्मिलित हो गये थे। जिनका वंश–विस्तार एवं राज्यक्षेत्र मध्य एशिया से लेकर पेशावर (गांधार) और मथुरा–आगरा पर्यंत था। कुश एवं कस्बा लोगों के लगभग तीन सौ साठ गांवों की पूरी की पूरी एक खाप आज भी राजस्थान के चुरू जिले में देखी जा सकती है। संभवतः पांचवें वासुदेव कुषाण के बजाय बौद्ध धर्म के भागवत या ब्राह्मण–धर्म की ओर आसक्त होने पर ही वैष्णव ब्राह्मणों ने उसी को महाभारत का श्रीकृष्ण वासुदेव मान लिया हो। दसवीं–ग्यारवीं शताब्दी में महमूद गजनवी के साथ आने वाले इतिहास के विद्वान अल्बेरुनी ने अपनी पुस्तक में संभवतः इसीलिए वासुदेव श्रीकृष्ण को पशुपालक जाट बताया है; या फिर वह ग्रीक देवता हरिकुलिस ही यहां आकर हरिकुल (विष्णु) का अवतार बन गया है। इस प्रकार से हमने अपने इस निबंध में वैदिक जरित या जर्तगणों को ही महाभारतकालीन भरतगणों किवां कुरुगणों का पूर्वज सिद्ध किया है।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Girl (DOB 12.03.92) 29/5'7" B. Tech, M.Tech, CSC. Processing M.A. Own coaching centre at Sector 19, Panchkula. Avoid Gotras: Kajla, Sangwan, Chhikara. Cont.: 9891351685, 9671153757
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B Tech CS working as Dy Manager WNS Gurgaon with Rs 20 LPA. Father working in AFT Chandigarh Mother home maker Brother Army officer NDA Avoid gotra Goyat Khatkar Nain Cont 8427737450. 7988624647
- SM4 Girl 27/5'3" Pursuing P.hd. Linguistics from D. U., IILTES 9.5. Avoid Gotras: Kadyan, Mor, Bhicher. Cont.: 8168666817.
- Suitable Match for Jat Girl (DOB 13.10.91) 29/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM in Criminal Law, Diploma in Labour Law, Diploma in Administrative Law, Ph.D in International law. Employed in Education Department, Haryana. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Contact: 9417333298
- SM4 Girl (DOB 05.10.90) 30/5'3" MDS (Endodontics). Working as Endodonist in Dental Academy and Hospital Chandigarh with package of Rs. 8 lakh PA. Father Professor, MDU, Rohtak. Mother Professor Jat College, Rohtak. Avoid Gotras: Chhilar, Virwal, Solanki. Cont.: 8199023624, 9416277507
- SM4 Girl 26/5'5" B. Tech (CS). Working as Deputy Manager in WNS at Gurugram with Rs. 20 lakh package PA. Father working in AFT Chandigarh. Mother housewife. Brother army officer. Avoid Gotras: Goyat, Khatri, Nain. Cont.: 8427737450, 7988624647
- SM4 Girl (DOB 01.01.90) 31/5'2" Master in Pharmacy. Employed as teacher in Diploma College. Father retired from HES-II, Mother housewife. Avoid Gotras: Goyat, Dhankhar, Balhara, Kadyan. Cont.: 9996956282
- SM4 Girl (DOB 23.08.98) 23/5'4" B.Sc. Non-Medical, MA. English, Doing B.Ed. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Singhmar, Nehra, Beniwal. Cont.: 9417753780
- SM4 Girl (DOB 25.10.92) 29/5'4" B.Tech (Electrical & Communication). Working as Contact Engineer in Bel company. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513
- SM4 Girl 25/5'5" CSE from P.U. Chandigarh. Employed as P.O. in BOI. Avoid Gotras: Ahlawat, Lohchab, Balhara, Rathi not direct. Preference Tri-city based family and at least equal status. Cont.: 9417378133
- SM4 Girl (DOB 25.01. 97) 24/5'6" M.Sc. (Chemistry) B.Ed. Avoid Gotras: Khatkar, Sheoran, Sohlat, Thakan. Cont.: 9888518198
- SM4 Girl 29/5'4". B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Boy (DOB 03.06.95) 26/5'9" Medical 10+2, D-Pharmacy, LLB, Doing practice at Hisar. Father in Haryana Government. Mother housewife. Avoid Gotras:Beniwal, Kundu, Sheoran. Cont.: 9416355407.
- SM4 Jat Boy (6.2.1993) 5'10", B. Tech & M. Tech working as a Pysical. Design Engineer in Semiconductor and Sofatware design Company ARM LTD. Living in Bombay with parents. Avoid Gotra: Duhan, Dahia, Nandal. Cont.: 9814116299
- SM4 Boy (DOB15.08.93)28/6'2" Employed in Government job at Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Father in Government job. Mother housewife. Avoid Gotras:Punia, Mann, Sheoran, Phor. Cont.: 9466217701
- SM4 Boy (DOB 01.03.93) 28/6'1" B.A., LLB, LLM Working as Legal Consultant in Law Firm at Chandigarh with Rs. 30000 PM. Father Class-I officer retired. Mother housewife. Family residence at Panchkula and Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia. Cont.: 9876155702
- SM4 Boy 28/5'7" B. Tech (ECE). Working in MNC Chandigarh as Software Engineer with package of Rs. 9.50 lakh PA. Father retired gazette officer. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Dhariwal, Punia, Khatkar. Cont.: 9356041518, 8360310610
- Suitable match for Divorced Jat Boy having one daughter, (DOB 09.08.85) 36/6 feet. Plus two passed. Agriculturist. Avoid Gotras: Pawar, Chahal, Ghanaghas. Cont.: 9317958900
- SM4 Boy (DOB 01.02.94) 27/6'2" Employed as Assistant in Indian Post Department at Panchkula. Avoid Gotras: Mann, Gehlayan, Chhikara. Cont.: 9416276670
- SM4 Boy (DOB (13.04.87) 34/6'2" M.A. Public Administration, LLB from CLC Delhi University. Advocate, Practicing in Delhi. Father Additional Chief Secretary retired from Govt. of India. Mother Lecturer retired from Haryana Government. Elder brother married and working as Manager in Indian Overseas Bank. Avoid Gotras: Ahlawat, Malik, Sangwan. Cont.: 9417496903,
- SM4 Boy (DOB 22.02.95) 26/5'11" B.Tech. Working in TCS Co. at Delhi with package of Rs. One lakh PA. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Singhmar, Nehra, Beniwal. Cont.: 9417753780
- SM4 Boy (DOB 91) 30/5'6" B.Tech. Working in I.T. MNC Co. with package of Rs. 19 lakh PA. Father retired from Government service. Family residing in own house at Panchkula. Preferred Tri-city/Delhi NCR working girl in IT MNC. Avoid Gotras: Ruhella, Dahiya. Cont.: 7206328529

- SM4 Boy (05.01.93) 28/5'8" B.Tech (Mechanical). Working as group- C employee in Govt. of India, Department of Central Water Commission at National Water Academy, Pune. Father Haryana Government employee. Mother housewife. Avoid Gotras: Kaliraman, Panghal, Punia. Cont.: 9992394448
- SM4 Boy (20.04.91) 30/5'8" B.Tech (Computer Science). Own business, with Sparrow GG Solutions_OPC Pvt. Limited. Income Rs. 6 lakh PA. Mother Assistant in Haryana government. Avoid Gotras: Kadyan, Ahlawat, Dagar. Cont.: 9876855880
- SM4 Boy (DOB Oct. 92) 29/6'2" B.Tech (CSE), M.S. (Business Analytics). Working as Product Manager in MNC at Chandigarh with Rs. 40 lakh package PA. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Bhambhu, Sangwan, Mohil. Cont.: 9464259180
- SM4 Boy 30/5'8" B.Tech from Kurukshetra University. Working in MNC Company at Banglore with Rs. 26 lakh package PA. Avoid Gotras: Malik, Khatri, Dahiya. Cont.: 9463491567
- SM4 Boy (DOB 22.10.92) 29/5'11" B.Tech (Electronics & Communication) Working in H.S.S.C. on contract basis. Father retired Under Secretary. Family settled in own house at Panchkula. Avoid Gotras: Nehra, Rathi, Duhan, Hooda. Cont.: 9417347896
- SM4 Boy (DOB 30.09.93) 28/6'2" Bachelor of Arts with Math and Economics from P. U. Chandigarh. Passed two Post graduate diplomas in Event Management & Global Hospitality Management from Canadian College. Avoid Gotras: Phougat, Dahiya, Rathi. Cont.: 9915484396
- SM4 Boy (DOB18.10.90) 29/6'1'' B.Tech from P.U. Chandigarh. Working as Inspector in CBI. Father retired as Under Secretary. Preferred working match in Central Government. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179, 7837551914
- SM4 Boy (DOB 10.08.88) 32/5'9" B.Tech. (Mechanical). Working as Training Officer, GITOT Rohtak. Avoid Gotras: Kharb, Rathi, Khatri. Cont.: 9416152842
- SM4 Boy (DOB 27.04.89)31/5'10" B.Tech.in Bio-Medical Engineering. Working in a reputed Master's Medical Company with package of Rs. 16.5 lakh PA. Father businessman. Mother housewife. Avoid Gotras:Jatyan, Duhan, Dagar. Contact:9818724242.
- Suitable March for Jat Boy 28/6'1" B. Tech. Mechanical. Employed in SSWL Limited. with package of Rs. 470000/- PA. Own house at Tri-city. Avoid Gotras: Nehra, Kadiyan, Dhull, Malik. Contact: 9876602035, 9877996707

INVITATION

Second Session of International Jat Parliament in March, 2022 at Jaipur (Rajasthan)

Hon'ble Members,

The Second Session of International Jat Parliament is proposed to be held at Jaipur in March, 2022 as conveyed by Sh. Ram Avtar Palsaniya and Sh. P. S. Kalwaniya from Rajasthan, Conveners of above mentioned Jat Parliament in preliminary meeting held at Jat Bhawan, 2-B, Sector 27-A Chandigarh on 18th November, 2021.

Further, both the Conveners invited all members of Jat Fraternity to attend the above mentioned session of International Jat Parliament being held at Jaipur. The exact date, time and venue of Jat Parliament will also be conveyed in due course of time.

Hence, you are requested to convey your consent and send details i.e. name, mailing address, contact No./Whatsapp within a period of twenty days after receipt of this invitation at Jat Bhawan Chandigarh & Panchkula at Phone Nos. 0172-2641127, 2590871, Cell Nos. 9056787532 and 9467763337.

However, it is made clear that the Jat Sabha Chandigarh/Panchkula will make transportation arrangements from Jat Bhawan Chandigarh and Panchkula for Jaipur and also that of hoarding & lodging etc. at Jaipur provided your consent is received well in advance along with the detail as asked i.e. minimum twenty days after receipt of this invitation.

With best wishes,

Jat Sabha Chandigarh/Panchkula.

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभा चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है। बिल्ड़िग के मजबूत ढ़ांचे/निर्माण के लिये साईट से मिट्टी परीक्षण करवा लिया गया है और बिल्ड़िंग के नक्शे/ड्राईंग पास करवाने के लिये सम्बन्धित विभाग में जमा करवा दिये गये है। इसके अलावा जम्मु प्रशासन व माता वैष्णों देवी साईन बोर्ड कटरा को यात्री निवास साईट पर जरूरी मूल भूत सार्वजनिक सेवायें - छोटे बस स्टैड़, टू-व्हीलर सैल्टर, सार्वजनिक शौचालय, वासरूम, पीने के पानी का स्टाल आदि के निर्माण हेतु पत्र लिखकर निवेदन किया गया है। यात्री निवास स्थल पर ब्लॉक विकास एवं पंचायत अधिकारी (बी.डी.पी.ओ.) कटरा द्वारा सरकारी खर्चे से दो महिला एवं पुरूष स्नानघर व शौचालय का निर्माण किया जा चुका है और पानी के कनैक्शन के लिये भी सरकारी कोष से फंड मंजूर हो गया है और शीघ्र ही पानी की आपूर्ति का कनैक्शन चालू हो जायेगा।

जाट सभा द्वारा यात्री निवास भवन का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने का प्रयास था लेकिन कोविड़-19 महामारी के कारण निर्माण कार्य शुरू नहीं किया जा सका और इस महामारी का जाट सभा की वित्तीय स्थिति पर भी प्रभाव पड़ा है। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला यात्री निवास भवन का निर्माण करने पर वचनबद्ध है और शीघ्र ही निर्माण शरू कर दिया जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा0 एम एस मलिक, भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला जीन्द (हरियाणा), वर्तमान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111/- तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426-427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये की राशि जाट सभा, चण्डीगढ को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही संम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड-एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : **डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)**

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : 0172–2654932 2641127

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।